चकमक

अक्टूबर, 1991

बाल विज्ञान पत्रिक

रु. 4.00

पत्तियों
पर
सांप!

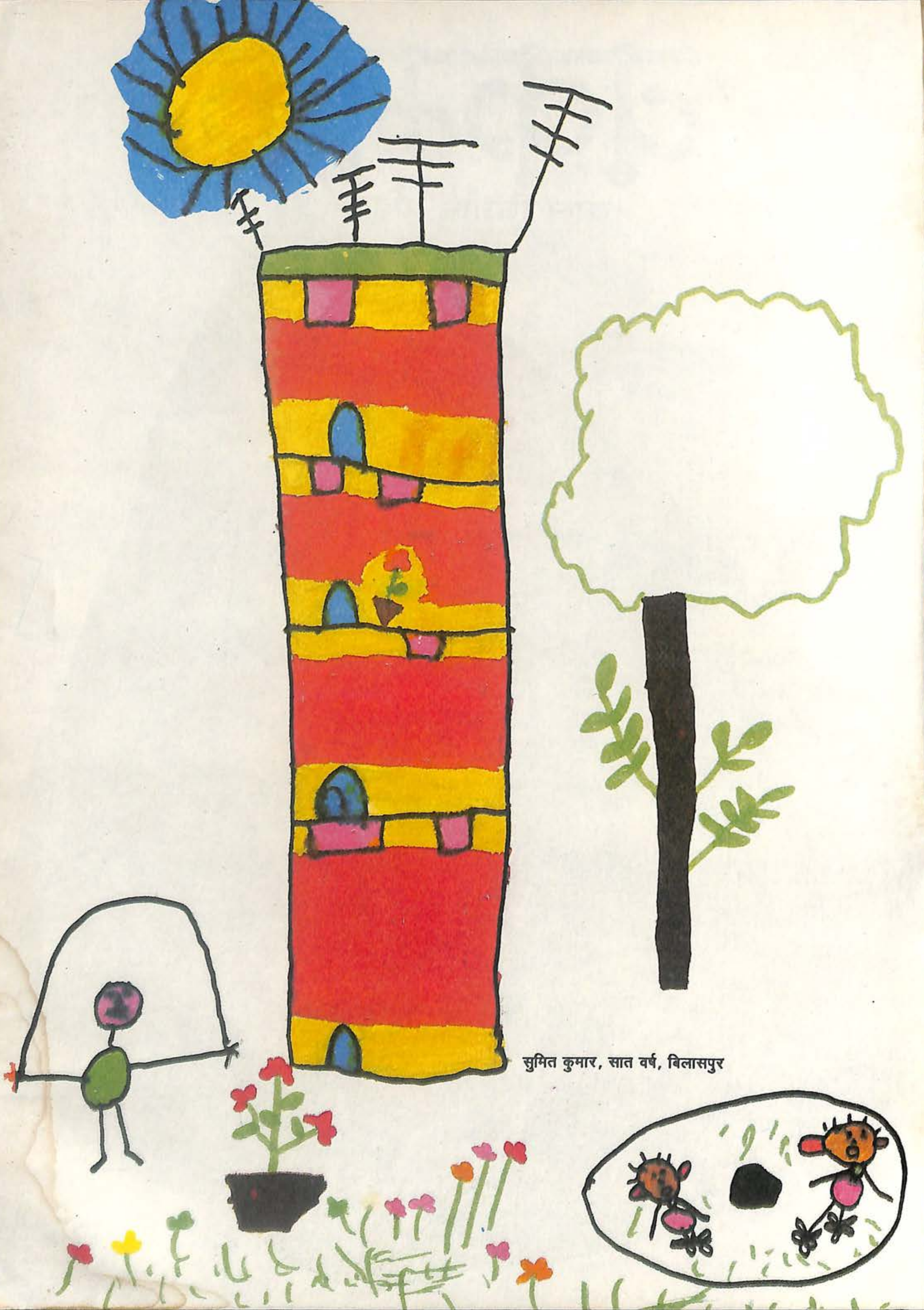

सुमित कुमार, सात वर्ष, बिलासपुर

कीर्ति चौहान, टिमरनी

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-7 अंक-4 अक्टूबर, 1991

संपादक
विनोद रायना

सह-संपादक
राजेश उत्साही
कविता सुरेश

कला
जया विवेक

उत्पादन/वितरण
हिमांशु बिस्वास, कमलसिंह

चकमक का चंदा
एक प्रति : चार रुपए
छमाही : बीस रुपए
वार्षिक : चालीस रुपए
डाक ख़र्च मुफ़्त
चंदा, मनीऑर्डर. या बैंक ड्राफ़्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य,
ई-1/208 अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462016 (म.प्र.)
फ़ोन : 563380

काग़ज़ : 'यूनिसेफ' के सौजन्य से।
सहयोग : राष्ट्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी संचार परिषद (विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली)

इस अंक में

विशेष

7 पत्तियों पर सांप!
14 पत्तियों के हैं काम निराले

कविताएं

11 नई सवारी
20 गणित

कहानी

35 बड़े भाई साहब

नाटक

22 नजानू ने रंग जमाया!

हर बार की तरह

2 बातचीत
3 मेरा पन्ना
6 तुम भी बनाओ
12 खेल काग़ज़ का
30 माथापच्ची
32 क्यों...क्यों....13
34 दुनिया पक्षियों की -30

और यह भी

16 चित्रकथा
28 खेल-पहेली

आवरण : सेम की पत्ती पर कीट द्वारा बनाई गई सर्पाकार आकृतियां।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

चित्र : विवेक

हमारे आसपास हर रोज़
जो कुछ गुज़र जाता है, उसमें बहुत कुछ ऐसा
होता है जो हमारा ध्यान बरबस ही खींच लेता है।
लेकिन कुछ ऐसी घटनाएं भी होती हैं
जिनकी तरफ ध्यान ही नहीं जाता।
कई बार इनमें से कोई घटना
इतनी महत्वपूर्ण हो उठती है कि हम चौंक जाते हैं।

वास्तव में हर घटना
पहले तो सामान्य घटना ही होती है।
घटना के प्रति हमारा व्यवहार, हमारी प्रतिक्रिया
और हमारी समझ उसे असामान्य या महत्वपूर्ण
बनाती है।
ऐसी ही एक घटना पिछले दिनों
पेड़-पौधों की पत्तियों (ख़ासकर सब्ज़ियों की पत्तियों)
पर घटी।
पहले तो शायद किसी ने ध्यान ही नहीं दिया हो,
पर अफ़वाह और हमारे प्रचलित विश्वासों से
संबंध जुड़ते ही वह महत्वपूर्ण हो उठी।
अफ़वाह थी कि पत्तियों पर सांपों की
आकृति उभर आई है।
असलियत क्या है? पढ़ो इस अंक में!

यह भी सोचो कि क्यों हम इन अजीब-ग़रीब
कहानियों पर विश्वास कर उठते हैं।

इस महीने कई
ख्यातनाम व्यक्तियों की जन्मतिथि या पुण्यतिथि है।
हिंदी कथा-साहित्य के एक ऐसे ही ख्यातनाम
लेखक प्रेमचंद की पुण्यतिथि (8 अक्टूबर)
भी इस माह है।

आमतौर पर मुंशी प्रेमचंद को ग्रामीण परिवेश
का कथाकार माना जाता है।
पर इस अंक में प्रकाशित उनकी कहानी
'बड़े भाई साहब'
हमें उनमें एक अलग कथाकार का परिचय
देती है।
कहानी हालांकि पचपन साल से
भी अधिक पुरानी है। लेकिन उसमें शिक्षा
व्यवस्था की जिन कमज़ोरियों को
उजागर किया गया है, वे आज भी ज्यों की त्यों हैं।
सवाल है आख़िर क्यों?
अपने में बड़े होने का झूठा दंभ छिपाए
कई 'बड़े भाई साहब' हमें अपने आसपास ही मिल
जाएंगे।
शायद हममें भी कोई हो.....। ख़ैर...

इसके अलावा इस अंक में अपना रंग जमाता
'नजानू!', एक नई खेल-पहेली
और सभी नियमित स्तंभ मौजूद हैं।
तो पलटो पन्ने और पढ़ डालो।

□ चकमक

हास्पीटल गाथा

अभय आरस, आठवीं, कन्नौद, देवास

हास्पीटल की सुनाता हूं तुम्हें कहानी,
यहां के कर्मचारियों की चलती मनमानी।

चाहे बीमारी बड़ी हो या दुखता हो पेट,
पहले डाक्टर के घर जाकर दो उनका रेट।

सौ-दो-सौ का पर्चा बनाएंगे,
फौरन भर्ती के लिए हास्पीटल पहुंचाएंगे।

यहां मच्छरों और खटमलों की भरमार है,
आवाज़ करो तो नर्स की फटकार है।

रोगी रोग से पीड़ित हो उसे दवा चाहिए या बूटी,
बिना दिए-लिए कंपाउंडर कहता, नहीं मेरी ड्यूटी।

यहां रज़ाई से होता चर्म रोग, तकिए से हैजा,
रोगी जाने लगता तो सब कहते, कुछ बचा हो तो दे जा।

□ पंकज शर्मा, आठवीं, हरदा

मेरा पन्ना

खेल खेल में

सुखविंदर सिंह कौर, हरदा

स्कूल लगने में देर थी। सब खेल रहे थे। मैं भी खेल खेलने के लिए गया तो मुझे कोई नहीं खिला रहा था। मुझे बहुत दुख हुआ। मैं एक जगह बैठ कर सोच रहा था कि स्कूल क्यों नहीं लग रहा है। थोड़ी देर में स्कूल लग गया। मैं सोचता ही रह गया। थोड़ी देर बाद मेरे टीचर ने देखा तो मुझे डांटा और मुझे कमरे में ले गए। थोड़ी देर में टन-टन-टन की आवाज़ सुनाई दी। सब बच्चे अपने-अपने घर चले गए। मैं यहीं रह गया। फिर टीचर ने कहा, 'तुम इतने उदास क्यों हो?'

मैंने डरते-डरते कहा, 'मुझे कोई नहीं खिलाता है।'

टीचर ने पूछा, 'तुम्हें क्यों नहीं खिलाते हैं?'

'मुझे मालूम नहीं।'

'ठीक है, तुम घर जाओ।'

मैं घर आ गया। मेरा मन किसी भी काम में नहीं लग रहा था। तो मम्मी ने पूछा, 'तुम इतने उदास क्यों हो?'

मैंने कहा, 'मम्मी, मुझे कोई नहीं खिलाता है।'

मम्मी ने कहा, 'इसमें उदास होने की क्या बात है? मैं सब बच्चों से कह दूंगी कि मेरे बच्चे को भी खेल खिलाया करो।'

दूसरे दिन मैं स्कूल गया तो मेरे दोस्त मुझे पकड़ कर खेल के मैदान में ले गए। मैं भी खेलने लगा। उस दिन मुझे बहुत खुशी हुई।

☐ **देवकरण पाटीदार, नेवरी, देवास**

मैं कौन हूं?

मैं लोहे की बनी हुई हूं। कच्चे लोहे की नहीं जो मुड़ जाता है, पक्के लोहे की, जिसे फ़ौलाद या स्टील कहते हैं, जो टूट सकता है पर मुड़ नहीं सकता। इसीलिए मैं टूट सकती हूं, किंतु झुक नहीं सकती।

मेरा शरीर-दुबला पतला और सफ़ेद होता है। शरीर एक ओर से नुकीला होता है और दूसरी ओर से उसमें एक छेद किया जाता है। इस छेद में मेरी दुम जोड़ी जाती है, परंतु वह लोहे की नहीं होती। सफ़ेद या रंग-बिरंगी भी हो सकती है। मेरी पूंछ बड़ी लंबी होती है। जब मैं छिप जाती हूं तो प्रायः दुम पकड़कर लाई जाती हूं, मेरे लिए यह प्रसिद्ध है-

छोटे से मुनीराम, बड़ी सारी पूंछ।
भाग गए मुनीराम, पकड़ लाओ पूंछ॥

बताओ मैं कौन हूं? नहीं बता सकते तो और सुनो, मैं ग़रीब और अमीर के साथ एक-सा व्यवहार करती हूं। सभी के लिए मैं बड़ी आवश्यक और उपयोगी हूं। जो काम तलवार नहीं कर सकती, मैं कर सकती हूं। अब बताओ मैं कौन हूं?

नहीं, लो और सुनो, उपयोगी होने पर भी मैं बड़ी सस्ती हूं। मुझसे काम लेते समय बड़ी सावधानी बरतने की आवश्यकता है। ज़रा-सी असावधानी हो तो मैं फ़ौरन डंक मारती हूं। अब भी नहीं बता सकते?

मैं कांटे को खाल से निकालकर फैंक देती हूं। मेरी पूंछ धागे की होती है। कपड़ों से मेरा अटूट संबंध है। आजकल मशीन का युग है। पर मशीन में भी तो मैं ही काम करती हूं। अब तो तुम जान ही गए होगे कि मैं कौन हूं। यदि नहीं, तो मेरा नाम लेने के लिए 'स' में छोटे 'उ' की मात्रा लगाओ और बोलो 'उई' क्या हुआ? चुभ गई न सुई!

☐ सुगनराम गौड़, ग्यारहवीं, देसूरी, राजस्थान

भाषण

एक गांव में एक बूढ़े व्यक्ति को सरपंच बना दिया गया। लोगों ने कहा, 'आप चुनाव जीते हैं, कुछ भाषण दीजिए, वह बोला, 'भाई मैं भाषण देना नहीं जानता।'

लोगों ने समझाया, 'भाषण देना तो एकदम सरल बात है। जो मुंह में आए कहते रहिए, बस हो गया भाषण।' और इस तरह लोगों ने उसे ज़बरदस्ती मंच पर खड़ा कर दिया।

उसने भाषण देना शुरू किया, "भाइयो मुझे भाषण देना नहीं आता। भाषण देना नेताओं का काम है। नेता अपने देश में कई हुए हैं, जैसे नेहरू। नेहरू जी को फूलों का बड़ा शौक़ था। फूलों के लिए जापान बहुत प्रसिद्ध है। जापान वार के लिए भी बहुत प्रसिद्ध है। वार कई होते हैं, जैस सोमवार, मंगलवार आदि। लेकिन शेर का वार बहुत ख़तरनाक होता है। शेर जंगल का राजा होता है। शरीर का राजा मन है। मन बड़ा चंचल होता है। चंचल, मधुबाला की छोटी बहन का नाम है, उसे दिल की बीमारी है। दिल एक मंदिर है। मंदिर में स्वामी की भक्ति होती है। वैसे सबसे अधिक स्वामीभक्त कुत्ता होता है, लेकिन उसकी पूंछ हमेशा टेढ़ी रहती है। आप लोग इस टेढ़ी पूंछ को सीधा करने का प्रयास करें। अगर अगले चुनाव तक पूंछ सीधी न हो सके, तो फिर मुझे ही वोट दें। मैं उसे सीधी करके ही रहूंगा।"

☐ प्रभाकर पांडे, जामगांव, दुर्ग

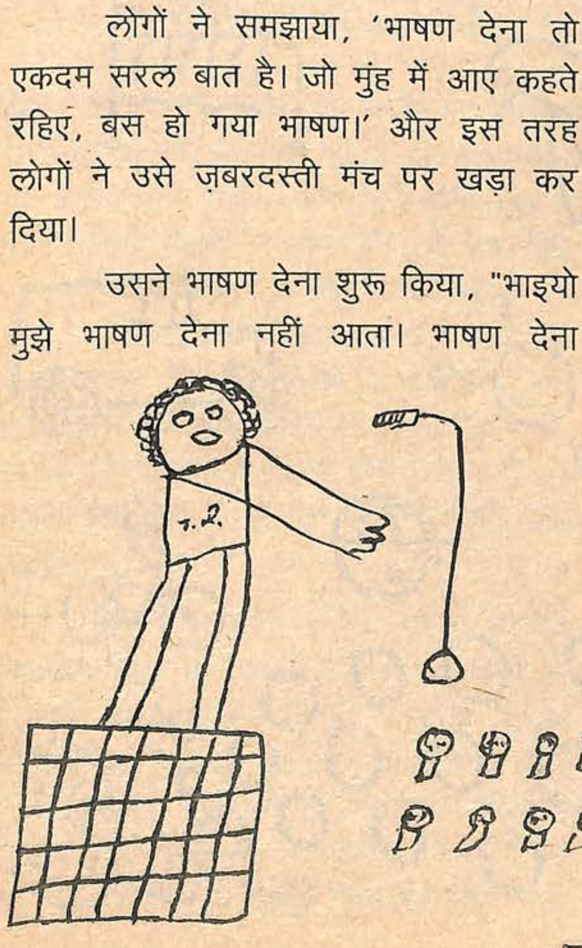

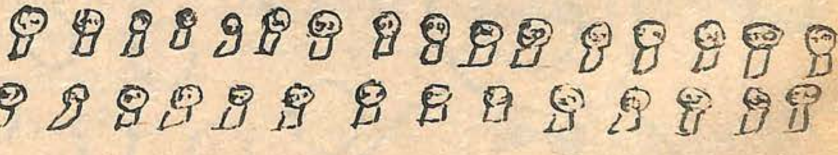

टीकमचन्द्र पाटीदार, देहरियासाहू, देवास

तुम भी बनाओ

M

m

N

n

O

o

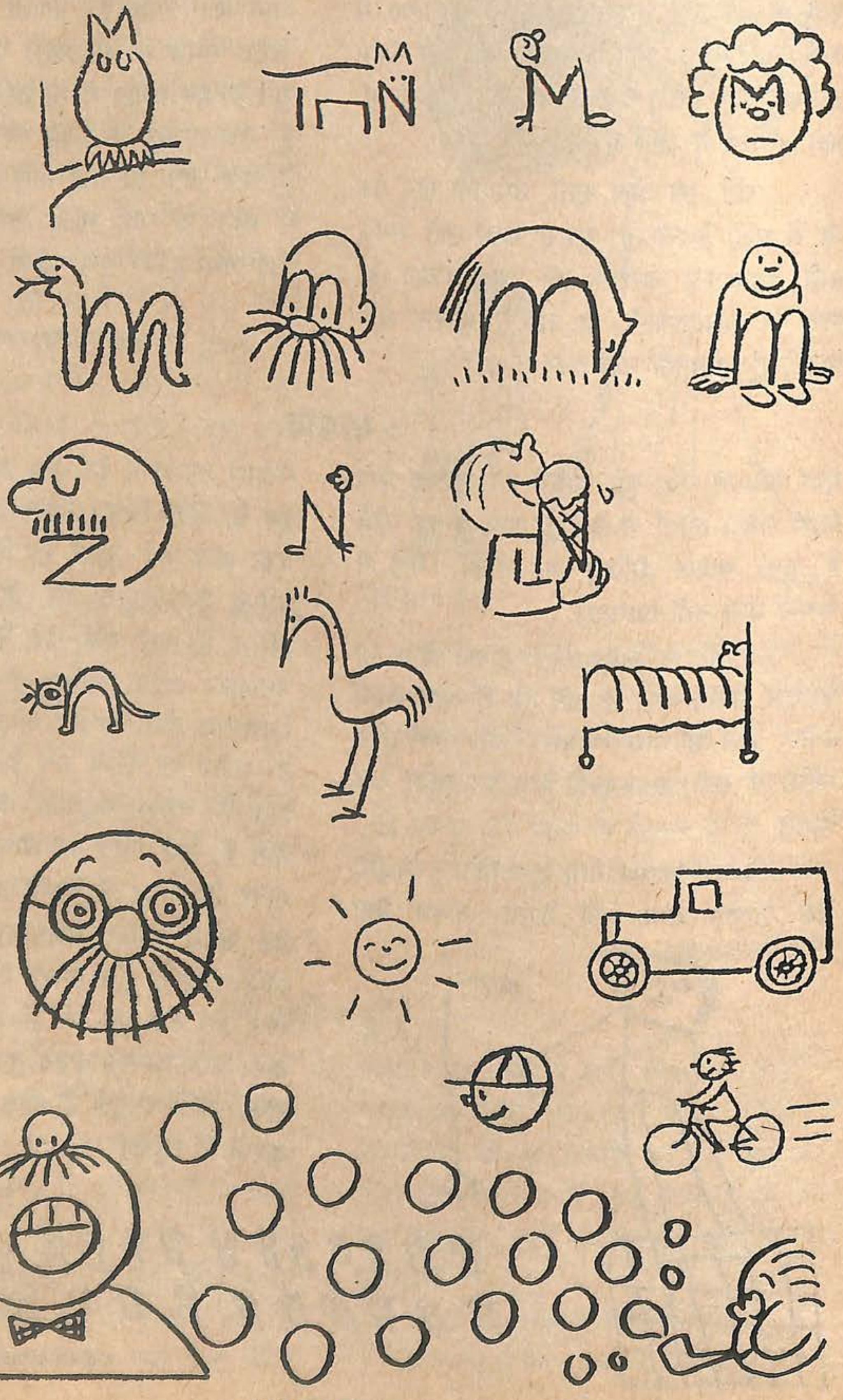

फोटो : दैनिक गांडीव, वाराणसी से

पत्तियों पर सांप !

सांप नहीं, एक छोटे से कीड़े की चाल

पिछले दिनों चारों तरफ एक अजीब-सी अफ़वाह फैली हुई थी कि पौधों की पत्तियों पर नाग-नागिन की आकृति उभर आई है। और यह इसलिए हुआ है क्योंकि किसी किसान ने नाग-नागिन के एक जोड़े को मार डाला। बस वे ही नाग-नागिन पत्तियों पर उभर आए हैं। अफ़वाह ने कुछ ऐसा ज़ोर पकड़ा कि सब्ज़ी बाज़ार में हरी सब्ज़ियों के दाम गिर गए। लोग हरी सब्ज़ियां, ख़ासकर पत्तेदार सब्ज़ियां, ख़रीदने से हिचकने लगे। जो लोग ऐसी बातों पर यक़ीन नहीं करते थे, वे एक दूसरे से पूछते, 'कि मामला क्या है?'

उधर अख़बारों में भी इससे संबंधित दिलचस्प ख़बरें छपने लगीं। ऐसी ही एक ख़बर के अनुसार पिछले दिनों हैदराबाद के लोगों ने एक छोटी-सी बात को राई का पहाड़ बना डाला। लोगों में यह अफ़वाह खूब फैली कि सांप/ नाग देवता ने टमाटर और पालक की पत्तियों पर उभरकर एक नए अवतार का रूप धारण किया है। कुछ ने तो यहां तक कहानी गढ़ ली कि किसी ने एक नाग या कोबरा मारकर पेड़ों पर फैंक दिया था, इसलिए देवता नाराज़ होकर बदला ले रहे थे।

तरह-तरह के अनुमान लगाए जाने लगे। बात इतनी बढ़ गई कि राज्यसभा में पूछा गया, 'सरकार अफ़वाह को रोकने के लिए क्या क़दम उठा रही है? सवाल पूछने वाले सांसद राजस्थान के थे। उनका कहना था कि, 'राजस्थान में इस अफ़वाह का व्यापक असर हुआ है। गांवों में लोगों ने, ख़ासकर महिलाओं ने, हरी सब्ज़ियां खाना छोड़ दिया है। वैसे ही उन्हें जो खाना मिलता है, वह बहुत पौष्टिक नहीं होता।' संयोग से इसी बीच 'नागपंचमी' का त्यौहार भी था, इससे इस अफ़वाह को और अधिक बल मिला। रही-सही कसर दूरदर्शन ने 'नागपंचमी' फ़िल्म दिखाकर पूरी कर दी।

खरगोन जिले के आदिवासी बहुल इलाके में रहने वाले हमारे एक मित्र ने बताया कि वहां नाग

शाकाहारी 'नागिन'

पिछले पखवाड़े अफ़वाह उड़ी कि एक नागिन ने अपने नाग की हत्या का बदला लेने के लिए तोरी, घीया और पालक जैसी सब्ज़ियों को ज़हरीला कर दिया है। बात की शुरुआत हुई सब्ज़ियों के पत्तों पर सांप जैसी लहरदार सफ़ेद रेखाओं के उभरने से। एक क़िस्सा यह रहा कि एक नाग को सब्ज़ियां ले जाने वाले ट्रक ने कुचल दिया। इसका बदला उसकी 'इच्छाधारी' नागिन ने इस तरह से लिया। पर असल में मौसम में हुए बदलाव से और कुछ अन्य कारणों से एक ऐसे कीड़े ने सब्ज़ियों पर धावा बोल दिया, जिसके एक-डेढ़ मिमी आकार वाले लार्वा पत्तों में घुसकर उन्हें अंदर से खा जाते हैं और एक लहरदार खोखली रेखा बना देते हैं। जो लार्वा के बढ़ने के साथ-साथ नाग की तरह चौड़ी होती जाती है।

('इंडिया टुडे' से साभार)

को भीलटदेव के नाम से पूजा जाता है। हर साल नागपंचमी पर नागमंदिरों में पूजा-अर्चना होती है। लोग अपनी श्रद्धा और हैसियत के मान से चढ़ावा चढ़ाते हैं। पर इस बार वहां एक नई बात देखने में आई। पूजा-अर्चना करने वाला हर व्यक्ति कुछ और चढ़ाए या न चढ़ाए नारियल ज़रूर चढ़ाना चाहता था। उधर बाज़ार से नारियल जैसे ग़ायब हो गए। मौक़े का फ़ायदा दुकानदारों ने उठाया। नारियल दुगने दामों पर बिके। हमारे मित्र का कहना था, कि यह सब उसी अफ़वाह का असर था। हर व्यक्ति नागदेवता को ख़ुश करना चाहता था। और शायद किसी ने अफ़वाह में यह और जोड़ दिया होगा कि नारियल ज़रूर चढ़ाना।

इंदौर के एक मोहल्ले में इस अफ़वाह ने और भी गुल खिलाए। वहां यह अफ़वाह थी कि जिन पत्तों पर अभी ऐसी कोई आकृति नहीं दिख रही है, उन पर नागपंचमी को नाग-नागिन दिखाई देंगे। हमारी परिचित धार की एक शिक्षिका ने, जो इंदौर की रहने वाली हैं, यह बताया। उन्होंने आसपास के लोगों को समझाने का प्रयास भी किया, कि ऐसी कोई बात नहीं है, यह निरी अफ़वाह है। पर किसी ने उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया।

धार लौटकर उन्होंने स्कूल में अपनी कक्षा की छात्राओं से इस पर चर्चा की। छात्राओं ने कहा कि, 'हां, हमने तो यह भी सुना है कि गिल्की की सब्ज़ी खाने से एक व्यक्ति की मौत भी हो गई है।' गिल्की के पत्तों पर भी नाग-नागिन की आकृति देखी गई थी। शिक्षिका ने छात्राओं को समझाया कि ऐसा कुछ नहीं है। उस व्यक्ति का मरना एक संयोग मात्र हो सकता है। इतना ही नहीं अगले दिन वे छात्राओं को लेकर आसपास के पेड़-पौधों की पत्तियां देखने निकल पड़ीं। उन्होंने पत्तियां इकट्ठी कीं। उन पर सचमुच सांप जैसी आकृतियां बनी हुई थीं। कक्षा आठवीं की एक छात्रा ने सूखी पत्ती पर बनी एक आकृति को सुई से कुरेदना शुरू किया और थोड़ी ही देर बाद उसने एक मरा हुआ कीड़ा बाहर निकाला। वास्तव में उस कीड़े ने ही पत्ती पर सर्पाकार आकृति बनाई थी। शिक्षिका ने छात्राओं से कहा, 'तुमने देखा असलियत क्या है!' लड़कियों का

जो जवाब था, वह भी इतना ही मज़ेदार है। उन्होंने बताया कि, 'हमारी बात मानता कौन है? घर वाले कहते हैं पढ़ने क्या लगी हो, अपने को ज़्यादा होशियार समझती हो।' ख़ैर..........

असल में अफ़वाह तो फैलती ही इस तरह है, जितने मुंह उतनी बातें। घटना शायद छोटी-सी और सामान्य थी, पर उसमें इतना नमक-मिर्च लग गया कि वह हौआ बन गई।

जिसे घटना कहा जा रहा है वह मात्र इतनी-सी बात है कि कई पौधों के पत्तों पर सफ़ेद धारियां-सी नज़र आ रही हैं। ये देखने में ऐसी लगती हैं कि जैसे सांप की आकृति हो।

हमने और हमारे कुछ साथियों ने भी इस बारे में खोजबीन की। जो तथ्य सामने आए उनके बारे में बताते हैं।

वास्तव में ये आकृतियां, पत्ती खाने वाला कीड़ा बनाता है। कीड़ा इतना छोटा और बारीक़ होता है कि वह पत्ती की ऊपरी सतह को छेदकर पत्ती के अंदर घुस जाता है और फिर अंदर ही अंदर, उसे खाता चलता है। जहां-जहां वह पत्ती को खा लेता है, वहां सफ़ेद धारी-सी बन जाती है। इस धारी को ध्यान से देखने पर कहीं (कभी-कभी धारी के अंत में) एक हल्का पीला, खाकी-सा धब्बा भी दिखाई देता है। इस धब्बे में ही कीड़ा छुपा बैठा होता है। किसी सुई वग़ैरह से कुरेदकर इस कीड़े को बाहर निकाल सकते हैं। इसकी लंबाई 1 से 1.5 मिलीमीटर के क़रीब होती है।

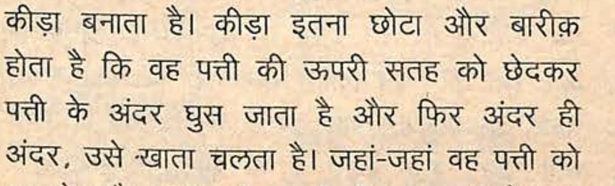

पत्ती के अंदर कीड़ा

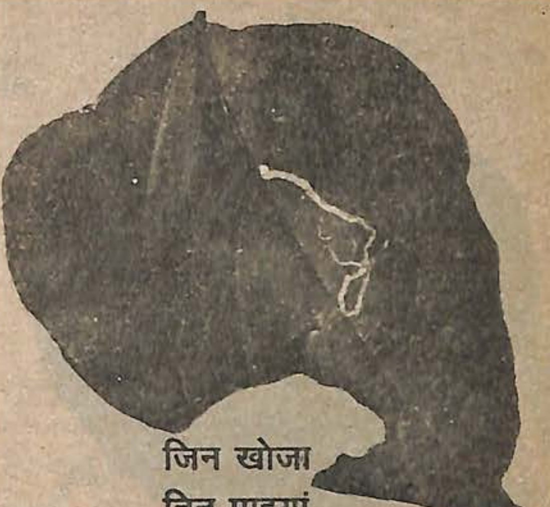

जिन खोजा तिन पाइयां

इस लेख में जिन शिक्षिका का ज़िक्र आया है वे हैं ***श्रीमती मालती महोदय। वे होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत आने वाली शासकीय कन्या माध्यमिक शाला, धार, क्रमांक-3*** में विज्ञान की अध्यापिका हैं।

यह उल्लेखनीय है कि होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण पद्धति में न केवल आस-पास घटने वाली रोज़मर्रा की घटनाओं को पढ़ाई से जोड़ा जाता है, बल्कि ऐसी घटनाओं के अध्ययन के लिए प्रोत्साहित भी किया जाता है।

मालती महोदय ने, विवरण भेजते हुए लिखा है कि, ***"अब मैंने तो यह सहज ही बता दिया था (छात्राओं को), मुझे तो कल्पना ही नहीं थी कि यह इतनी महत्वपूर्ण बात हो जाएगी।"*** यह सहज होने का आत्मविश्वास शायद होशंगाबाद विज्ञान पद्धति की ही देन है।

पत्ती से कीड़ा निकालने वाली छात्रा तनूजा इसी शाला में कक्षा आठवीं में पढ़ती हैं।

बैतूल जिले की शासकीय माध्यमिक कन्या शाला की शिक्षिका उमा राजपूत ने भी ऐसी ही एक पत्ती से कीड़ा निकाला और अपने सभी साथियों को भी बताया। पत्ती किसी छात्रा ने लाकर दी थी। उनके स्कूल में जो सूक्ष्मदर्शी (डायनम सूक्ष्मदर्शी) था; उसमें उन्होंने कीड़े को ध्यान से देखा। संयोग से यह शाला बैतूल जिले की उन छह शालाओं में से एक है, जिसमें होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम चल रहा है।

चकमक के दो पाठकों ने भी इस संबंध में हमें पत्र लिखे। एक ने अपना नाम नहीं लिखा, पर वे ***बारखेड़ा, टिमरनी जिला-होशंगाबाद*** के रहने वाले हैं। दूसरी पाठक हैं-***मधुबाला भार्गव, सातवीं, कन्या शाला, शोभापुर पिपरिया, जिला-होशंगाबाद*** की छात्रा।

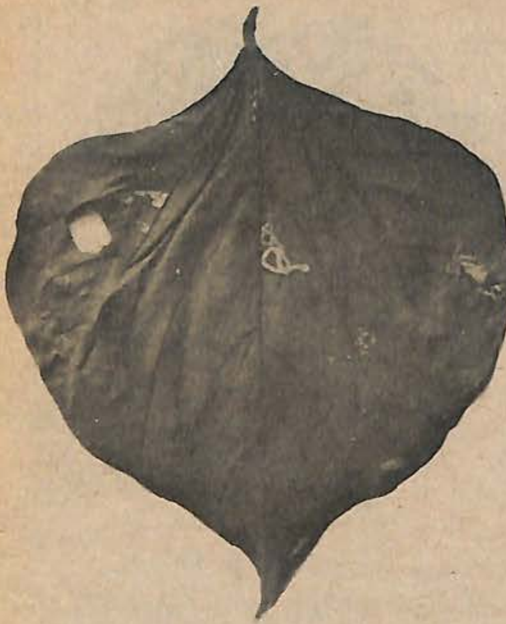

इस कीड़े की ठीक-ठीक पहचान तो अभी नहीं हो पाई है। पर दो कीड़ों पर शक किया जा रहा है। एक है एग्रोमाइज़ा नामक कीट का लार्वा, इसे **पत्ती छेदक** या **लीफ़ माइनर** भी कहा जाता है। यह पत्ती की ऊपरी या निचली सतह के बीच, पत्ती के हरे भाग यानी क्लोरोफ़िल को खाता हुआ आगे बढ़ता है। इसके आगे बढ़ने से सर्पाकार गलियारा सा बनता जाता है। लार्वा धीरे-धीरे विकसित होकर प्यूपा में बदलता है और फिर प्यूपा, कीट बनकर उड़ जाता है।

केंद्रीय एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन केंद्र, नागपुर के वनस्पति रक्षा अधिकारी का कहना है कि यह लीफ़ माइनर ही है। यह पत्तीदार सब्ज़ियों, दालों और यहां तक कि खरपतवारों के पत्तों की सतह पर भी मिलता है। रक्षा अधिकारी का यह भी कहना है कि डरने की कोई बात नहीं है। न ही ऐसी सब्ज़ियां खाने से कोई नुकसान होने की संभावना है, जिनकी पत्तियों पर ऐसी आकृति उभर आई है। सिर्फ़ सफाई की दृष्टि से कीड़े लगी पत्तियों को अलग कर देना चाहिए।

दूसरा कीड़ा एस्केरिस, नारू जैसे चर्चित कीड़ों का भाई-बंधु है। इस कीड़े पर शक का कारण इसकी शारीरिक रचना है। जंतु विज्ञान के वर्गीकरण के अनुसार यह कीड़ा जिस समुदाय का सदस्य है, उसकी विशेषता यह है कि समुदाय के सभी कीड़ों के शरीर पर कहीं भी टांगें या रोम इत्यादि नहीं होते हैं। इनकी सारी मांसपेशियां लंबाई में जमी होती हैं यानी आड़ी दिशा में कोई मांसपेशी नहीं होती। अतः इन्हें चलने के लिए इन्हीं लंबवत मांसपेशियों का ही उपयोग करना होता है। इसीलिए इनकी चाल भी सर्पाकार होती है।

इस समुदाय की एक ख़ास प्रजाति के कीट ही पत्ती पर हमला करते हैं। ये कीट अपनी लार ग्रंथियों से कई तरह के एंज़ाइम बनाते हैं। इन एंज़ाइमों के प्रभाव से कीट पत्ती की कोशिकाओं को पचाना शुरू कर देते हैं और अंदर ही अंदर आगे बढ़ते रहते हैं।

तो यह तो तय है कि पत्तियों पर बनी आकृतियां नाग-नागिन की आकृति नहीं बल्कि इन कीड़ों का कमाल है। अब सांप जैसी आकृति बनना एक संयोग भर है। जैसा कि तुमने पढ़ा दोनों ही कीट (या कीट का लार्वा) सर्पाकार गलियारा बनाते चलते हैं। अनुमान यह है कि जब लार्वा या कीट पत्ती खाना शुरू करते हैं तो धीरे-धीरे मोटे होते जाते हैं, इसीलिए क्रमशः गलियारा मोटा होता जाता है और आख़िर में चौड़ा हो जाता है, जो फन जैसा या सांप के मुंह जैसा लगता है।

वैसे तो पत्तियां खाने वाले ये कीट हर साल अपना प्रकोप फैलाते हैं। पर इनके प्रसार में मामूली गर्मी और ज़्यादा नमी अधिक मदद करती है। संयोग से इस साल अनुकूल वातावरण बन जाने से इनका असर कुछ ज़्यादा ही दिखाई पड़ा।

वास्तव में यह एक सीधी-सादी प्राकृतिक घटना है। इसकी अजीबो-ग़रीब व्याख्या और प्रचलित अंधविश्वास ने मिलकर लोगों में भय का वातावरण बना दिया था। सच तो यह है कि ऐसे कीट, फफूंद, वाइरस, बैक्टीरिया आदि पेड़-पौधों पर लगते ही रहते हैं और हम उनसे अनजान बने रहते हैं।

❑❑❑

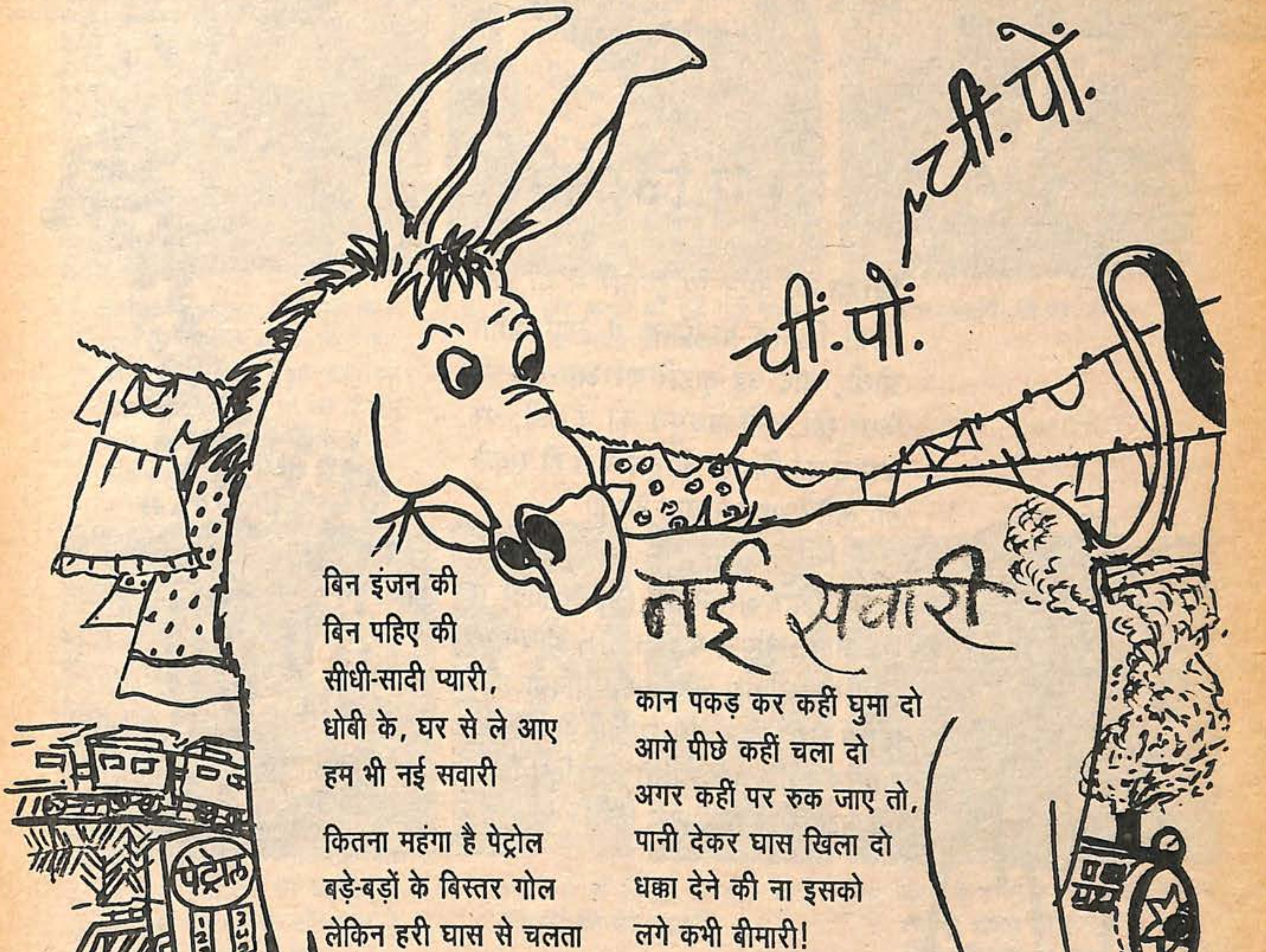

नई सवारी

बिन इंजन की
बिन पहिए की
सीधी-सादी प्यारी,
धोबी के, घर से ले आए
हम भी नई सवारी

कितना महंगा है पेट्रोल
बड़े-बड़ों के बिस्तर गोल
लेकिन हरी घास से चलता
मेरा वाहन गोल-मटोल
सस्ती क़ीमत में मिलता है
ले लो नकद-उधारी!

कान पकड़ कर कहीं घुमा दो
आगे पीछे कहीं चला दो
अगर कहीं पर रुक जाए तो,
पानी देकर घास खिला दो
धक्का देने की ना इसको
लगे कभी बीमारी!

पूंछ खिंचे तो 'हार्न' बजाए
चीं, पों, चीं, पों, का स्वर आए
कभी सवारी कर लें इस पर,
कभी मालवाही बन जाए
मोटर, बस, स्कूटर वाले
देखें 'शान' हमारी!

□ डॉ. हरीश निगम

सभी चित्र : शोभा घारे

घर में जिराफ़

जिराफ़ को तुमने चिड़ियाघर में या फिर किसी किताब या फ़िल्म में देखा होगा। सोचो, यदि वह तुम्हारे घर आ जाए तो कैसा रहे। चलो सचमुच का न सही, पर कागज़ का जिराफ़ तो तुम बना ही सकते हो। कैसे? यह हम बता देते हैं।

जिराफ़ बनाने के लिए अख़बारी कागज़; तार आधामीटर (जो आसानी से मुड़ जाए, लेकिन मज़बूत हो); बांधने के लिए पतला तार; कपड़े की चिंदियां और काला तथा पीला रंग चाहिए होगा। जब सामान इकट्ठा कर लो तो यहां दिए चित्रों की मदद से बनाना शुरू करो।

1. तार के 11 से.मी., 12 से.मी. और 13 से.मी. के तीन टुकड़े काटो। पहले दो टुकड़ों में क्रमशः पिछले तथा अगले पैर बनेंगे। तीसरे से गरदन, सिर तथा शरीर का शेष हिस्सा बनेगा। अगर बड़ा जिराफ़ बनाना हो तो तारों के टुकड़े बड़े ले लो बस उनमें जो अनुपात है उसका ध्यान रखना। टुकड़ों को चित्र में दिखाए अनुसार मोड़ लो।

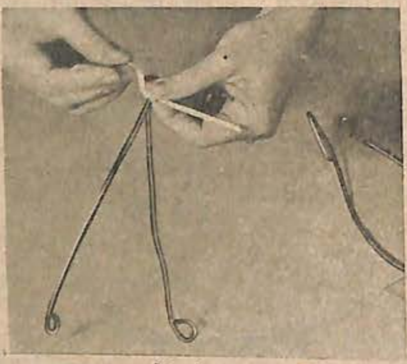

2. इन आकारों को आपस में बांधकर जिराफ़ का ढांचा बनाओ। बांधने के लिए पतले तार का इस्तेमाल करो।

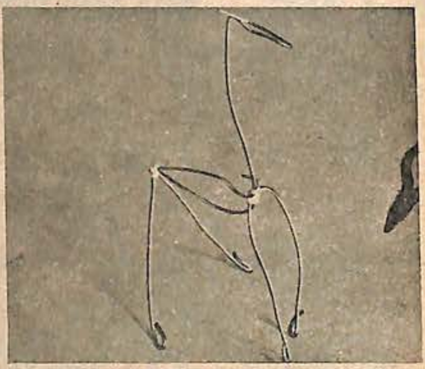

3. जोड़ों को मज़बूत करने के लिए कपड़े की चिंदियों को गोंद में भिगोकर, जोड़ों पर कसकर बांध दो। जब जोड़ सूख जाएं तो ढांचे को खड़ा करो। पैरों को आवश्यकतानुसार दाएं-बाएं मोड़कर उसका संतुलन बनाओ।

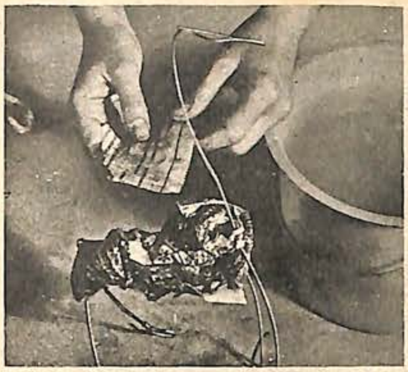

4. काग़ज़ को फाड़कर, गुड़ी-मुड़ी करके इतने बड़े-बड़े गोले बनाओ कि जिराफ़ की पीठ के ढांचे पर आ जाएं। इन्हें गोंद में भिगोकर ढांचे पर रख दो और ऊपर से काग़ज़ की पट्टियां गोंद में भिगोकर लपेट दो।

5. इसी तरह काग़ज़ को गुड़ी-मुड़ी करके गरदन पर लपेटो और ऊपर से गोंद में भीगी पट्टियां लपेट दो।

6. इसी तरह सिर भी बना लो।

7. पैर वाले तारों पर भी काग़ज़ को गुड़ी-मुड़ी करके लपेटो और ऊपर से काग़ज़ की पट्टियां लपेट दो।

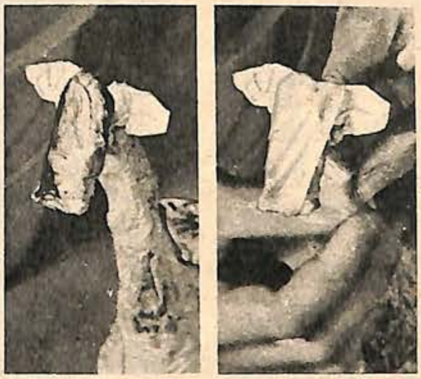

8. काग़ज़ से ही जिराफ़ के कान और सींग बनाओ। पीछे पूंछ भी।

9. गरदन के बालों के लिए गरदन के नाप की भूरे काग़ज़ की लगभग 2 से.मी. चौड़ी पट्टी लो। उसे लंबाई में बीच से मोड़ लो और फिर चित्र में दिखाए तरीक़े से छोटे-छोटे कट लगा दो।

10. कट लगाने के बाद पट्टी को चौड़ाई में फैलाओ और बीच में गोंद लगाकर गरदन पर चिपका दो।

11. जब ढांचा पूरी तरह सूख जाए, तो उसे पीले रंग से रंग लो। अगर रंग हल्का हो तो उसकी दो-तीन तह चढ़ा लो। जब पीला रंग सूख जाए तो उस पर काले रंग से धब्बे बना लो।

12. अब थोड़ी कलाकारी ब्रश से करो। काले रंग से जिराफ़ की आंखें, नाक और खुर भी बना डालो। बस जिराफ़ तैयार।

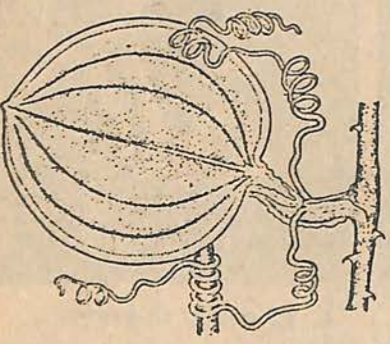

पत्तियों के हैं काम निराले

अपने आसपास लगे पेड़-पौधों और उन पर लगी हरी-हरी पत्तियों को तुम रोज़ ही देखते होगे। पत्तियों का हरापन पेड़ में एक अनोखी छटा भर देता है। पतझड़ में जब पत्तियां गिर जाती हैं, तो बिना पत्तियों के पेड़ आंखों को बिलकुल नहीं सुहाते। लेकिन पत्तियां केवल पेड़ की शोभा भर नहीं होती हैं, वे पेड़ के लिए इतने तरह-तरह के काम करती हैं कि उनके बारे में जानकर आश्चर्य होता है। आओ देखें कि ये कौन से काम हैं!

तुमने किसी किताब में या कभी चकमक में यह पढ़ा होगा कि पेड़-पौधों का भोजन इन्हीं पत्तियों में बनता है। हां, हम प्रकाश संश्लेषण की ही बात कर रहे हैं। जिसमें हवा, पानी और सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में पत्तियां अपने हरेपन यानी क्लोरोफ़िल की मदद से भोजन तैयार करती हैं।

पेड़ सांस भी लेते हैं। इस क्रिया में वे वातावरण से ऑक्सीजन लेते हैं और कार्बन डाइ ऑक्साइड छोड़ते हैं। वैसे तो पेड़-पौधों के अन्य हिस्सों से भी यह क्रिया पूरी होती है लेकिन इसमें पत्तियों का योगदान सबसे अधिक रहता है।

तुम कभी न कभी किसी घने छायादार पेड़ के नीचे ज़रूर खेले या बैठे होगे। कभी ग़ौर किया है कि गर्मी की तपती दुपहरी में पेड़ के नीचे इतना ठंडा क्यों लगता है? इसमें भी पत्ती का कमाल है। पेड़-पौधे अपनी जड़ों से ज़मीन का पानी सोखते हैं। इस पानी का कुछ हिस्सा भोजन बनाने में और कुछ अन्य कामों में ख़र्च हो जाता है। जो पानी बचता है उसका पेड़-पौधे क्या करें? वे इसे पत्तियों के माध्यम से समय-समय पर बाहर निकालते रहते हैं।

इस काम के लिए पत्तियों की निचली सतह पर छोटे-छोटे छेद होते हैं। इन्हीं के माध्यम से अतिरिक्त पानी वातावरण में निकलता है। ये छेद भी दो प्रकार के होते हैं। एक वे जो रात-दिन खुले रहते हैं, दूसरे, वे जो रात को अपने-आप बंद हो जाते हैं। तुमने यह तो देखा होगा कि जब बुख़ार में किसी को बहुत पसीना आता है तो बुख़ार उतर जाता है। इसी तरह जब पेड़-पौधों की पत्तियों से पानी भाप बनकर धीरे-धीरे उड़ता है तो आसपास का वातावरण भी ठंडा हो जाता है। लेकिन एक बात का ध्यान रखना कि पेड़ों में पानी के भाप बनने और गर्म होते पानी से भाप बनने में अंतर है। पानी को अगर लगातार गर्म होने दिया जाए तो वह पूरा का पूरा भाप बनकर उड़ जाएगा। परंतु पेड़ घंटों धूप में खड़े रहें, तब भी उतना ही पानी भाप बनकर उड़ता है, जितने की उन्हें ज़रूरत नहीं है।

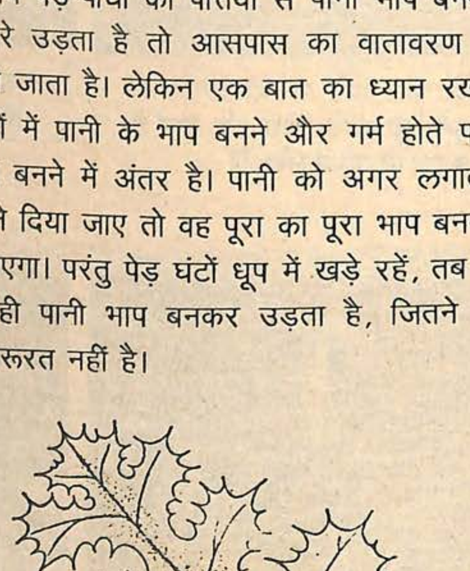

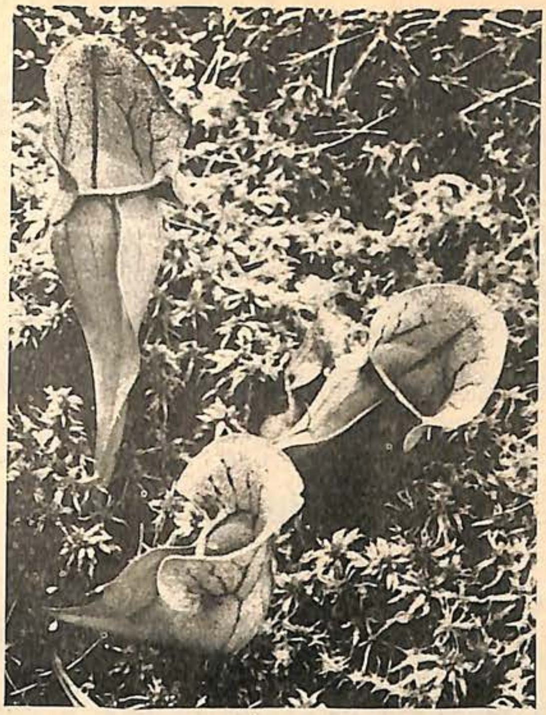

कीट भक्षी : पिचर प्लांट

ख़ैर, यह तो हुई पत्तियों के सामान्य कामकाज की बात। पर पत्तियां कुछ पेड़-पौधों में ऐसे काम भी करती हैं, जो बिलकुल ही अलग और अनूठे होते हैं।

जैसे बौगेनविलिया के फूलनुमा पत्ते। बौगेनविलिया के वास्तविक फूल अपने आप में न तो बहुत बड़े होते हैं, न ख़ुशबूदार; न ही उनके रंग बहुत आकर्षक होते हैं। इसलिए तितलियों, भौरों आदि को आकर्षित करने के लिए टहनी की पहली पत्तियां फूलों की पंखुड़ियों की तरह रंग-बिरंगी हो जाती हैं।

इसी तरह कुछ पौधों की कुछ पत्तियों के डंठल पौधे को सहारा देने के लिए लताओं में बदल जाते हैं। ये लताएं आसपास के किसी आधार से लिपटकर पौधे को सीधा खड़ा रखने में मदद करती हैं। कुछ पौधों में टहनी की पहली पत्तियां ही लताओं में बदल जाती हैं, जैसे मटर में।

पौधे को जानवरों से बचाने के लिए पत्तियों के छोर नुकीले और धारदार हो जाते हैं, जैसे भटकटैया में।

नागफनी तथा रेगिस्तान में उगने वाले कई अन्य पौधों में पत्तियां कांटों में बदल जाती हैं, ताकि पानी भाप बनकर न उड़ सके।

इतना ही नहीं कुछ पौधों की पत्तियां उनके लिए भोजन जुटाती हैं, जैसे पिचर प्लांट में। पिचर प्लांट, कीट भक्षी पौधा है। इसकी पत्तियों के सिरे कलश का आकार बना लेते हैं। कलश के मुंह पर मीठे द्रव की छोटी-छोटी थैलियां होती हैं, जिनसे शहद जैसा पदार्थ निकलता है। जब कोई कीड़ा कलश पर मीठा द्रव चूसने आता है तो वह फिसलकर अंदर गिर पड़ता है। अंदर की सतह इतनी चिकनी होती है कि वह बाहर नहीं निकल पाता। कलश में मौजूद अम्लीय द्रव कीड़े को पचा डालते हैं।

पानी में उगने वाले युट्रीकुलेरिया नामक पौधे की पत्तियां भी पौधे के लिए कीड़ों को पकड़ती हैं। पौधा पानी की सतह पर तैरता रहता है। इसकी पत्तियां बहुत पतली और कटी-फटी होती हैं। इनमें से कुछ पत्तियां ब्लैडर का रूप धारण कर लेती हैं। ब्लैडर के मुंह पर रोम होते हैं। ब्लैडर का दरवाज़ा भी अंदर की तरफ खुलने वाले वाल्व की तरह काम करता है। पानी में तैरते हुए छोटे-छोटे कीड़े ब्लैडर के मुंह पर लगे रोमों में फंसकर अंदर चले जाते हैं, जहां उनका पाचन हो जाता है।

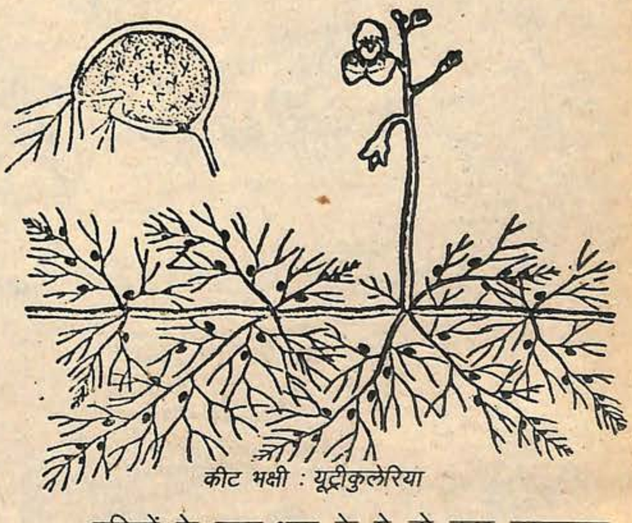

कीट भक्षी : यूट्रीकुलेरिया

पत्तियों के काम-धाम के ये तो कुछ उदाहरण भर हैं। अगर हम हर पेड़-पौधे की पत्तियों को ध्यान से देखें, तो उनमें कुछ न कुछ ख़ास बात नज़र आएगी ही। तुम भी देखो।

□□

जंगल में मंगल
चित्रकथा : शिवेंद्र पांडिया
शब्द : राजेश उत्साही
मुनिया और उसके दोस्त छोटू-मोटू ने "वन्य जीव" सप्ताह मनाए जाने की बात सुनी, तो तय किया कि जंगल जाकर जीवों को नज़दीक से ही देखा जाए ! बस वे निकल पड़े ।
जंगल पहुंच तो गए, पर वापसी का ख़्याल आते ही रोने लगे । क्योंकि रास्ता भूल गए थे ।
एक खरगोश ने उनसे रोने का कारण पूछा !
छोटू को तो भूख भी लगी थी ।
खरगोश ने उन्हें अपने पीछे आने का इशारा किया ।
फिर उन्होंने गाजर खाई, केले खाए ......
.... और गाय का दूध पिया !
.... हाथी पर बैठ, जंगल घूमा जी भर के ......!

जब जी भर गया तो फिर ख़्याल आया घर का ....!
"शहर पलट" तोते ने अपनी योजना बताई उन्हें ....
वे सुनकर खुशी से झूम उठे !
हाथी ने बनाया बेड़ा! उस पर होकर सवार, लौटे घर खुशी-खुशी।

पत्तियों के साथ दो प्रयोग

इसी अंक में तुमने कहीं यह पढ़ा होगा कि पत्तियां पेड़ में मौजूद अतिरिक्त पानी को बाहर निकालती हैं। एक आसान प्रयोग की मदद से तुम इसे देख सकते हो।

प्रयोग के लिए पारदर्शक पौलीथीन की एक साफ़ और सूखी थैली तथा थोड़ा धागा चाहिए होगा। बस, यह ध्यान रखना कि थैली में कोई छेद न हो और न ही वह बहुत कमज़ोर हो। हां, प्रयोग के लिए पेड़ भी ऐसा चुनना जिसकी पत्तियां नरम हों, जैसे चांदनी। नरम पत्ती वाले पेड़-पौधों में अधिक पानी निकलता है।

अब पौलीथीन की थैली को पेड़ की किसी टहनी पर इस तरह चढ़ाओ कि उसमें दस-बारह पत्तियां आ जाएं। धागे से थैली के मुंह को टहनी के साथ कसकर बांध दो।

अब इस थैली को चार-पांच दिन के लिए ऐसे ही बंधी रहने दो। हां, यह ज़रूर देखते रहना कि थैली का मुंह अच्छी तरह से बंद तो है।

पांचवें दिन तुम्हें थैली के अंदर टहनी और पत्तियों के साथ कुछ और भी नज़र आएगा।

यह तो तुम जानते ही हो कि पौधे अपनी पत्तियों की मदद से सूर्य के प्रकाश में अपना भोजन बनाते हैं, जिसे हम प्रकाश संश्लेषण भी कहते हैं। प्रकाश संश्लेषण के दौरान वे कार्बन डाइ ऑक्साइड लेते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं। इसे तुम एक प्रयोग की मदद से देख सकते हो।

प्रयोग के लिए एक बीकर या बीकर जैसा बर्तन, एक ऐसा कीप जो बीकर में आ जाए, एक परखनली, एक चुटकी खाने का सोडा, एक अगरबत्ती, माचिस और पानी में उगने वाले कोई पौधे (जैसे जलकुंभी) की ज़रूरत पड़ेगी। प्रयोग करते समय तुम्हारा कोई दोस्त भी साथ रहे तो मदद मिलेगी।

प्रयोग शुरु करने से पहले एक-दो बातें जान लो-

1. पानी में खाने का सोडा डालने पर रासायनिक क्रिया होती है। इसमें बनने वाली कार्बन डाइ ऑक्साइड पानी में घुल जाती है।
2. ऑक्सीजन पानी से हल्की होती है इसलिए यह पानी के ऊपर जमा हो जाती है।
3. ऑक्सीजन की उपस्थिति, जलती हुई वस्तु को अधिक तेज़ जलने में मदद करती है।

अब सबसे पहले बीकर को पानी से लगभग तीन-चौथाई भर लो। इसमें एक चुटकी खाने का सोडा डालो। पौधे की कुछ डालियों को काटकर एक धागे से हल्के से बांध लो। ध्यान रहे कि प्रयोग के दौरान न तो वे अलग हो पाएं और न ही टूटें-फूटें। अब इन डालियों को बीकर में इस तरह डालो कि उनके कटे हुए सिरे ऊपर की तरफ रहें। डालियों को उल्टे कीप से ढक दो। ढकते समय यह ध्यान रखना कि डालियों का कोई भी हिस्सा न तो कीप के बाहर रहे और न ही कीप से दबे। अब एक परखनली में पानी भरकर उसे कीप की नली पर

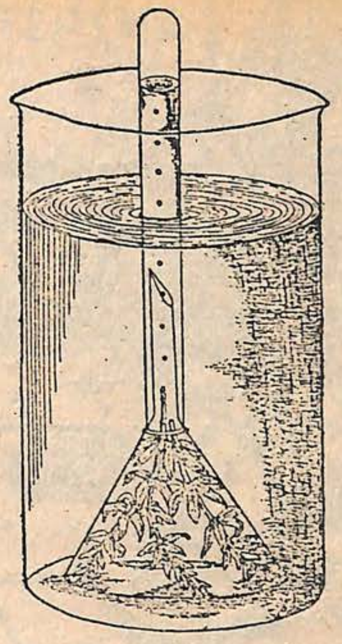

उल्टा रख दो (चित्र देखो)।

अब बीकर को उठाकर ऐसी जगह ले जाओ, जहां धूप हो। थोड़ी देर में तुम देखोगे कि परखनली के पानी में छोटे-छोटे बुलबुले ऊपर की तरफ उठ रहे हैं।

इससे पता चलता है कि सूर्य के प्रकाश में पौधे की डालियों पर लगी पत्तियों से कोई गैस निकल रही है। अब देखना यह है कि क्या यह वाकई ऑक्सीजन है। जब लगभग आधी परखनली भर गैस इकट्ठी हो जाए, तब पानी के अंदर ही परखनली का मुंह अंगूठे से बंद करके बाहर निकाल लो। परखनली को सीधा कर लो। पर अंगूठे से उसका मुंह बंद किए रहो। परखनली में पानी नीचे चला जाएगा और गैस ऊपर आ जाएगी।

अब यहां तुम्हें अपने दोस्त की मदद लेनी पड़ेगी। अपने दोस्त से कहो कि वह एक अगरबत्ती जलाकर दे। ध्यान रहे कि अगरबत्ती में लौ नहीं हो। अगरबत्ती को अपने दूसरे हाथ में पकड़ो और परखनली के मुंह पर से अंगूठा हटाकर फुर्ती से अगरबत्ती का जलता हुआ सिरा उसमें ले जाओ। सिरा पानी में न डूबे। ध्यान से देखो क्या हुआ? और इससे क्या सिद्ध होता है?

ग

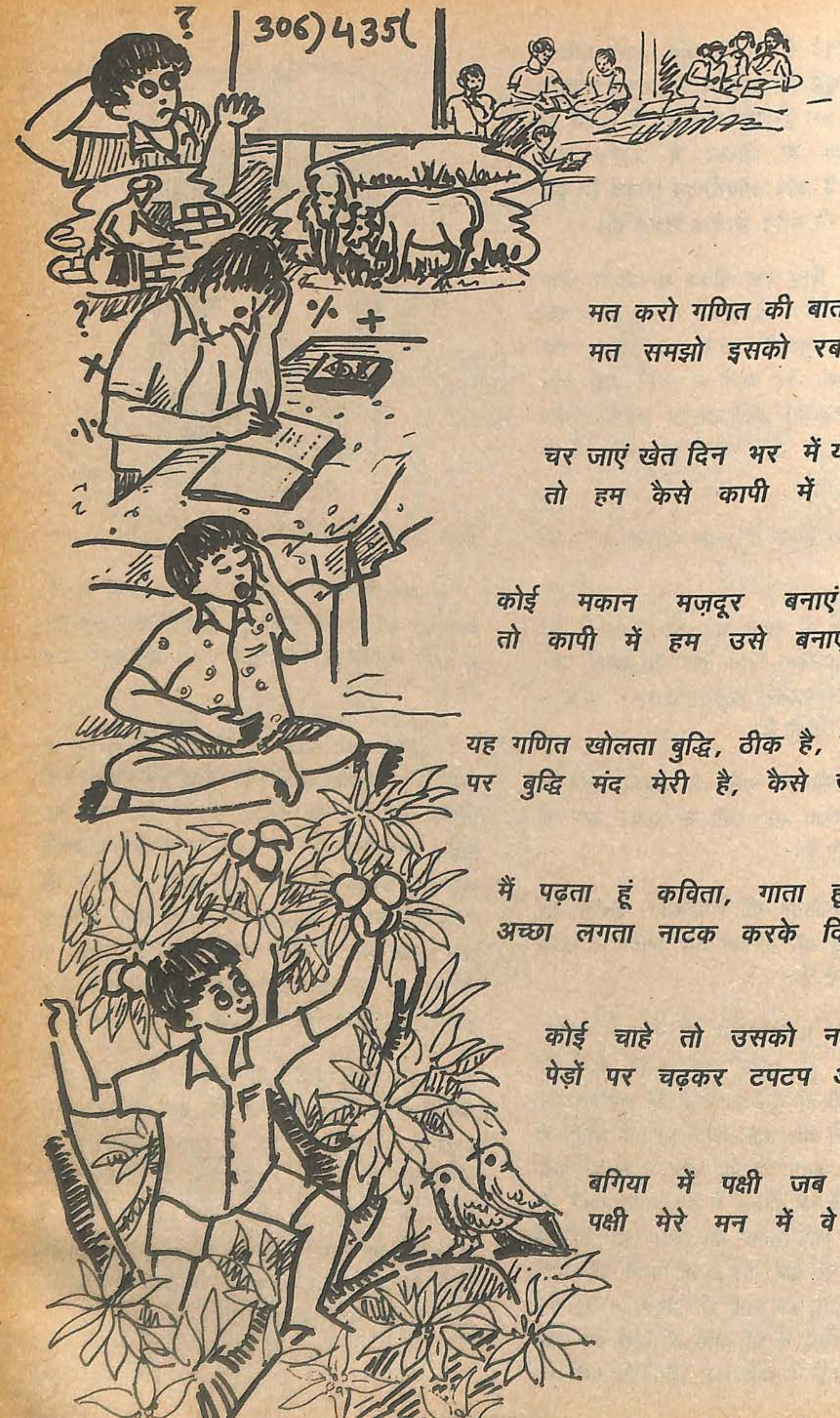

मत करो गणित की बात, कठिन है भाई
मत समझो इसको रबड़ी और मलाई

चर जाएं खेत दिन भर में यदि दस गाएं
तो हम कैसे कापी में उन्हें चराएं

कोई मकान मज़दूर बनाएं जैसे
तो कापी में हम उसे बनाएं कैसे

यह गणित खोलता बुद्धि, ठीक है, माना
पर बुद्धि मंद मेरी है, कैसे जाना

मैं पढ़ता हूं कविता, गाता हूं गाना
अच्छा लगता नाटक करके दिखलाना

कोई चाहे तो उसको नाच दिखाऊं
पेड़ों पर चढ़कर टपटप आम गिराऊं

बगिया में पक्षी जब गाना गाते हैं
पक्षी मेरे मन में वे बस जाते हैं

ीत

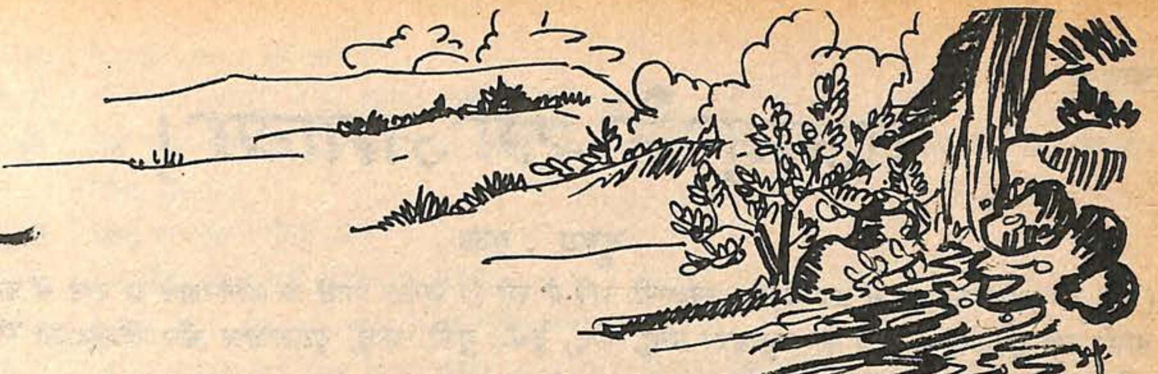

कोयल का स्वर तो है बस सबसे प्यारा
गा उठता बाग आम का जैसे सारा

नदियों में उठतीं लहरें, झरने आते
चट्टानों पर शीशे सी चमक दिखाते

अमरूद, बेर या मटर, पपीता केला
अच्छे लगते, मैं खाता नहीं अकेला

अच्छे लगते कपड़े, पर गणित! बचाओ
या गणित सरल सा, कोई मुझे सिखाओ

या इसे सिखाओ ऐसे, मैं भी जानूं
जिससे मैं इसको नहीं कठिन फिर मानूं

पर अभी कठिन लगता है मुझको भारी
मैं देख चुका हूं बुद्धि लगाकर सारी

होता यदि कठिन नहीं, कहता क्यों ऐसे
लोहे के हैं ये चने, चबाऊं कैसे?

□ डॉ. श्रीप्रसाद
चित्र : सुचिता राऊत

नजानू ने रंग जमाया!

दृश्य : एक

(इस बार मंच के बारे में हम कोई जानकारी नहीं दे रहे हैं। केवल पात्रों के आने-जाने के बारे में बताएंगे। बाकी सब तुम्हारी कल्पना के अनुसार। छोटू, मोटू, टुन्नी, मुन्नी, जानू, गुलेलबाज़ और गोलीवाला गीत गा रहे हैं।)

गीत : देखो देखो नजानू का हाल देखो
कैसे पड़ती है उल्टी हर चाल देखो
देखो देखो नजानू का हाल देखो

जल्दबाज़ : सुनो, सुनो। एक मज़ेदार बात सुनो।

छोटू : क्या आफ़त है। जल्दबाज़ तुम हमें गाने भी नहीं देते।

जल्दबाज : अब इस गाने की ज़रूरत नहीं है।

टुन्नी, मुन्नी : क्या मतलब?

गोलीवाला : साफ़-साफ़ बताओ क्या बात है?

जल्दबाज़ : बात यह है कि मैं अभी-अभी नजानू से मिल कर आ रहा हूं।

मोटू : तो क्या हुआ? वह कोई राष्ट्रपति तो है नहीं।

गुलेलबाज़ : तुम लोग उसे बोलने देते हो या मैं अपनी गुलेल निकालूं।

टुन्नी : अच्छा चुप। सब चुपचाप रहो। हां जल्दबाज़ अब बोलो क्या हुआ?

जल्दबाज़ : यह तो तुम सबको मालूम है कि नजानू पिछले महीने भर से हमारे साथ खेलने नहीं आ रहा है।

मुन्नी : लेकिन हम तो उसके घर जाते ही रहते हैं।

जल्दबाज़ : हां, लेकिन हमने कभी यह भी सोचा है कि वह दिन भर घर में क्या करता रहता है।

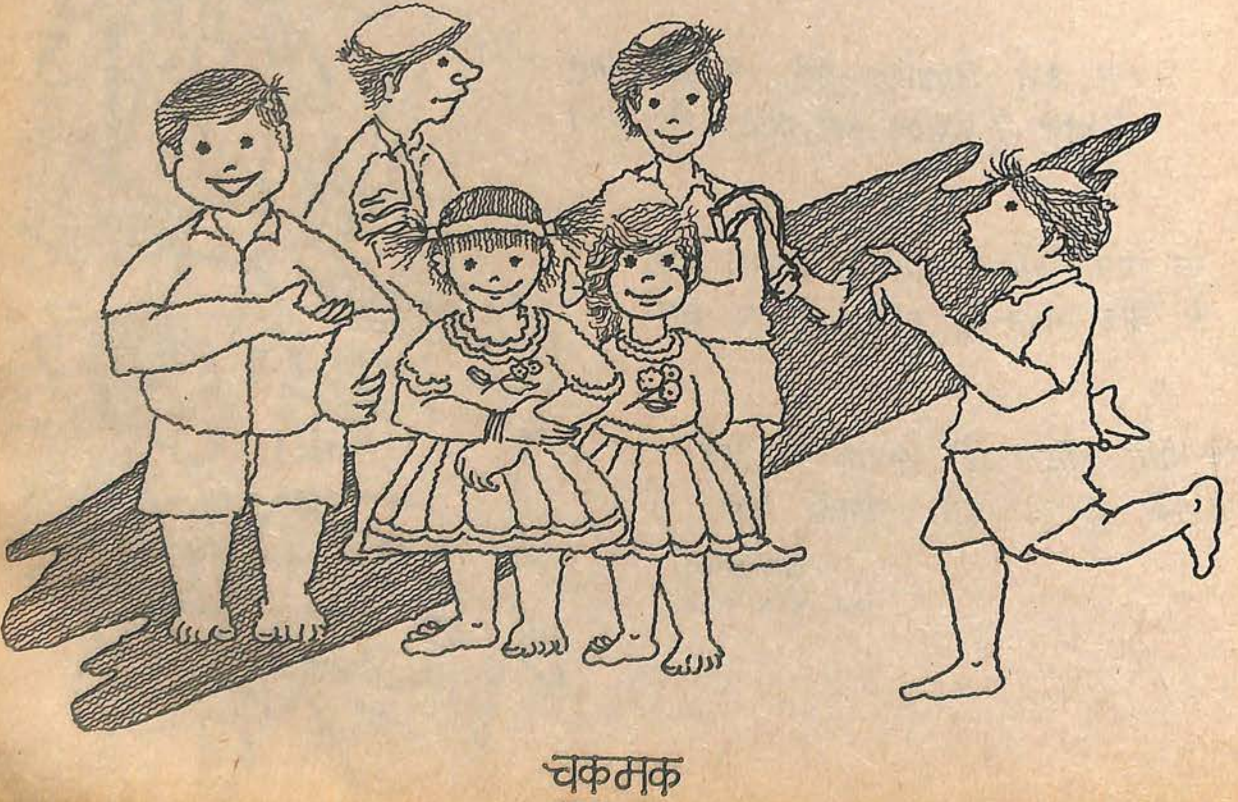

जानू : ओफ़्फ़ो! ज़्यादा बोर मत करो।

गोलीवाला : और क्या! बताना है तो बताओ, नहीं तो हमें गाने दो।

जल्दबाज़ : तुम लोग सुनते तो हो नहीं। आज जब मैं उसके घर मिलने गया तो उसने मुझे जादू के बहुत से खेल दिखाए।

टुन्नी : जादू के खेल? कैसा जादू?

जल्दबाज़ : ऐसा वैसा जादू नहीं, अंकों का जादू।

जानू : नजानू और अंकों का जादू। हो ही नहीं सकता।

जल्दबाज़ : क्यों? तुम्हारा नाम जानू है तो इसका यह मतलब तो नहीं कि तुम्हीं सब कुछ जानते हो।

मुन्नी : अच्छा-अच्छा बहस मत करो! चलो हम सब उसके घर चलते हैं खुद ही देख लेंगे।

गुलेलबाज़ : हां, चलो।

(सब जाते हैं)

दृश्य : दो

(सब नजानू के घर पहुंचते हैं। छोटू नजानू को आवाज़ देता है।)

छोटू : नजानू । नजानू। ओ नजानू।

(नजानू बाहर आता है)

नजानू : अरे! तुम सब के सब एक साथ? आओ-आओ, अंदर चलो।

मोटू : नहीं नजानू। हम लोग यहीं ठीक हैं।

नजानू : बात क्या है?

जानू : हम लोग तुम्हारा अंकों का जादू देखने आए हैं।

नजानू : अच्छा-अच्छा। तो जल्दबाज़ ने तुम्हें बता दिया।

टुन्नी : नजानू तुम क्या सचमुच जादू कर सकते हो?

नजानू : अरे नहीं यह सब तो गणित की बहुत आसान क्रियाएं हैं, जिन्हें एक बार समझ कर कोई भी कर सकता है।

जानू : कुछ कर के दिखाओगे भी या बातें ही करते रहोगे।

नजानू : दिखाना क्या, हम सब मिलकर करेंगे। रूको, मैं अपना ब्लैकबोर्ड लाता हूं।

(नजानू भीतर जाता है)

मुन्नी : नज़ानू तो कह रहा है कि कोई जादू नहीं है।

गोलीवाला : धीमे बोलो। जब तक हम किसी काम को सीखें नहीं तब तक वह जादू ही तो है।

गुलेलबाज़ : यह तो आज समझदारी की बातें कर रहा है।

जल्दबाज़ : चुप रहो, नजानू आ रहा है।

(नजानू कंधे पर एक थैला लटकाए और हाथों में ब्लैकबोर्ड उठाए बाहर आता है। कुछ साथी उसे ब्लैकबोर्ड ऐसी जगह रखने में मदद करते हैं जहां से ब्लैकबोर्ड दर्शकों को भी दिखाई पड़े। फिर नजानू थैले में से चॉक, कोरे काग़ज़, पैंसिल, निकालता है और सबको एक-एक काग़ज़, पैसिंल देता है।)

नजानू : लो सब एक-एक काग़ज़, पेंसिल ले लो। मैं ब्लैकबोर्ड पर लिखूंगा तुम लोग चाहो तो उसे काग़ज़ पर उतार सकते हो उसकी जांच भी कर सकते हो। तो अब शुरू करें?

जल्दबाज़ : हां, हां, फ़ौरन।

नजानू : सबसे पहले हम एक के अंक का जादू देखते हैं।

(नजानू ब्लैकबोर्ड पर बड़े-बड़े अक्षरों में 11X11, 111X111, 1111X1111, 11111X11111

111111X111111, 1111111X1111111, 11111111X11111111, 111111111X111111111 लिखता है।)

नजानू : तुम इसमें से एक–एक सवाल ले लो और अपने काग़ज़ पर हल करो।

टुन्नी : बाप रे! इतने बड़े-बड़े सवाल!

जानू : तो तुम छोटा सवाल ले लो। सबसे बड़ा सवाल मैं ले लेता हूं।

(सब अपने लिए एक-एक सवाल छांट लेते हैं।)

नजानू : अब देखो, मैं इन सवालों के हल लिखता हूं। तुम सब अपने-अपने उत्तर मिलाते जाना।

छोटू : तुमने तो उत्तर रट लिए होंगे।

नजानू : बिल्कुल नहीं, क्योंकि इसकी ज़रूरत ही नहीं है।

मोटू : चुप रहो। मुझे सवाल हल करने दो।

(नजानू बोर्ड पर हल लिखता है : 121, 12321, 1234321, 123454321, 12345654321, 1234567654321, 123456787654321, 12345678987654321)

टुन्नी : मैंने तो सवाल हल कर लिया।

जल्दबाज़ : चुप। जितनी बड़ी तू उतना तेरा सवाल।

छोटू : मेरा हल भी एकदम सही है। 111 गुणित 111 बराबर 12321 ।

मोटू : मेरे सवाल का उत्तर एकदम सही है, 1234321 ।

नजानू : अच्छा ठीक है। अब बाक़ी लोग चाहें तो रुक सकते हैं, बचे हुए सवाल मैं वैसे ही समझाता हूं। ध्यान से देखो। पहले सवाल में 11 का वर्ग है इसमें गुणित और गुणक दोनों में एक का अंक दो बार आता है। मैंने पहले दो तक सीधी गिनती लिखी फिर एक तक उल्टी। दूसरे सवाल में 111 यानी एक का अंक तीन बार है इसलिए पहले तीन तक सीधी गिनती लिखी और उसके बाद एक तक उल्टी। इसी तरह से आख़िरी सवाल में एक का अंक नौ बार है इसलिए पहले नौ तक सीधी गिनती और बाद में एक तक उल्टी गिनती लिख दी। अब बताओ क्या इसे रटने की ज़रूरत है?

गुलेलबाज़ : नहीं यह तो एकदम आसान है।

गोलीवाला : आसान तो लगेगा ही क्योंकि नजानू ने समझने का तरीक़ा बता दिया।

नजानू : इसे दूसरे तरीक़ों से भी समझा जा सकता है, लेकिन वे तरीक़े तुम खुद ढूंढना। अब एक दूसरा खेल बताता हूं।

टुन्नी : लेकिन खेल मज़ेदार होना चाहिए।

नजानू : मंजूर, मज़ा नहीं आएगा तो खेल बंद कर देंगे।

जानू : अब जल्दी शुरू करो।

नजानू : जानू तुम काग़ज़ पर तीन अंकों की कोई भी संख्या लिख लो, लेकिन मुझे मत बताना।

(जानू लिखता है।)

जानू : लिख ली।

नजानू : अब वही संख्या दोबारा इकाई के अंक के आगे लिख लो।

जानू : लिख ली। यह संख्या तो छह अंकों की हो गई।

नजानू : हां, अब यह काग़ज़ गुलेलबाज़ को दे दो।

(जानू काग़ज़ गुलेलबाज़ को दे देता है)

गुलेलबाज़ : मैं इस काग़ज़ का क्या करूं?

नजानू : काग़ज़ का कुछ मत करो, लेकिन जो संख्या उस पर लिखी है उसमें सात का भाग दे दो।

गोलीवाला : तुम क्या कर रहे हो नजानू?

नजानू : मैं वो संख्या बिना देखे बताने वाला हूं जो जानू ने सोची है।

मुन्नी : अरे वाह, क्या तुम सचमुच ऐसा कर सकते हो?

नजानू : बिल्कुल । तुम देखती जाओ।

गुलेलबाज़ : लो, हो गया भाग। अब?

नजानू : अब यह काग़ज़ मुन्नी को दे दो और मुन्नी, गुलेलबाज़ का जो भागफल आया है, तुम उसमें ग्यारह का भाग दो।

छोटू : अच्छा, नजानू अगर तुम जानू की सोची हुई संख्या नहीं बता पाए तो?

नजानू : पहले तो ऐसा होगा नहीं, और अगर हो जाए तो मैं तुम सब को अपने बगीचे के आम खिलाऊंगा।

जानू : और अगर तुमने सोची हुई संख्या बता दी तो हम तुम्हें अपने साथ फिर से खिलाने लगेंगे।

नजानू : अगर नहीं बता पाऊं तो नहीं खिलाओगे?

जानू : अरे, वह तो बात की बात है। अब तो हम भी तुम्हारे बिना नहीं खेलेंगे।

मुन्नी : नजानू, भाग तो हो गया। अब?

नजानू : अब यह काग़ज़ मोटू को दे दो।

(मुन्नी काग़ज़ मोटू को देती है)

मोटू : नहीं, नहीं मुझे मत दो मैं तो भाग में बहुत कमज़ोर हूं।

नजानू : घबराओ मत, जो संख्या शेष बची है वह तो चार अंकों की ही रह गई है।

मोटू : अरे तुम्हें कैसे मालूम?

नजानू : वह बाद में बताऊंगा, पहले तुम उसमें तेरह का भाग दो।

छोटू : नजानू, तुम अगर जानू की संख्या बता दोगे तो क्या हमें आम नहीं खिलाओगे?

नजानू : देखो आम तो पक ही चुके हैं और इतने सारे आम खाएगा कौन?

मोटू : नजानू मैंने भागफल निकाल लिया। अब?

नजानू : अब तुम काग़ज़ जानू को दे दो।

(मोटू काग़ज़ जानू को देता है)

नजानू : जानू, आख़िरी यानी की मोटू ने जो भागफल निकाला है वो देखो।

जानू : अरे! यही संख्या तो लिखी थी मैंने।

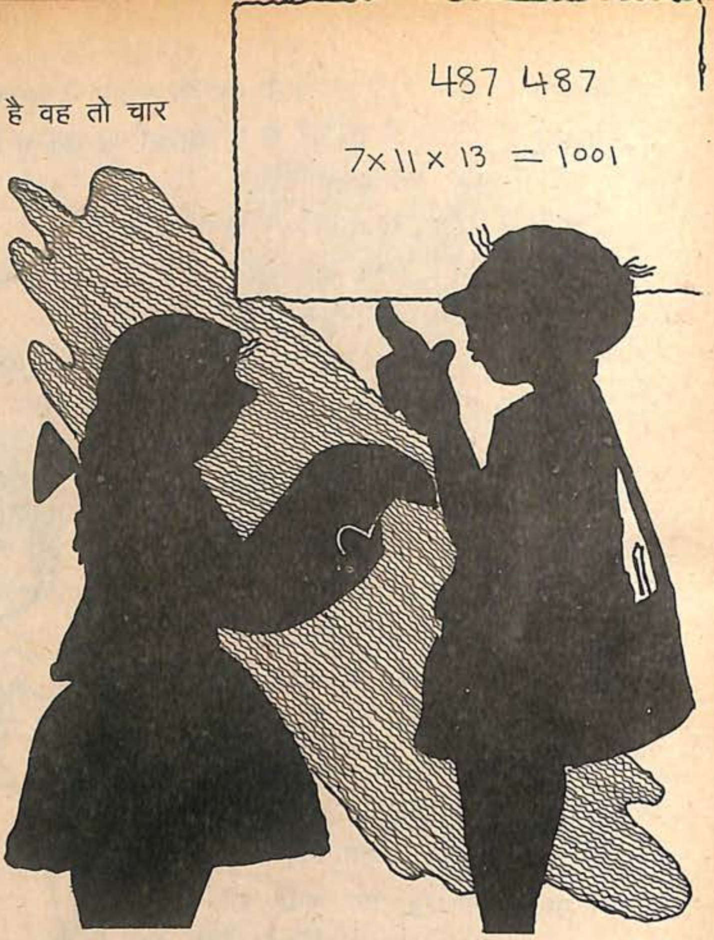

नजानू : मैंने कहा था न कि मैं तुम्हारी संख्या बता दूंगा।

(सब शोर मचाते हैं)

दुन्नी : लाओ मैं देखूं।

छोटू : अरे, मुझे भी तो देखने दो।

गुलेलबाज़ : अरे वाह। यह तो कमाल है।

मुन्नी : चुप। सब चुप होओ। ....अच्छा नजानू तुमने यह कैसे किया?

नजानू : मैंने नहीं बल्कि तुम्हीं लोगों ने सब कुछ कर दिया।

गोलीबाज़ : अच्छा, लेकिन हमें ज़रा समझाओ तो।

नजानू : ठीक है, देखो, जानू ने जो संख्या सोची थी वह थी 487 ***(बोर्ड पर लिखता है)*** । फिर इसके आगे दोबारा लिखा 487 यानी अब संख्या हो गई 487487। इसका मतलब हुआ कि जानू ने 487 में 1001 का गुणा कर दिया। अब, सबसे पहले गुलेलबाज़ ने इसमें सात से भाग दिया। फिर, मुन्नी ने गुलेलबाज़ के भागफल में ग्यारह से और मुन्नी के भागफल में मोटू ने तेरह से भाग दिया। यानी कि तीनों ने कुल मिलाकर 7×11×13 यानी 1001 से भाग किया। तो अब तुम्हीं सोचो की उत्तर क्या आना चाहिए?

जानू : मतलब यह कि मैंने अपनी संख्या में 1001 से गुणा किया और इन सब ने उसमें 1001 से भाग कर दिया?

मुन्नी : और क्या? इसका मतलब यह कि नजानू ने हमें बुद्धू बनाया।

नजानू : अरे नहीं..........नहीं ***(हंसता है)***। अच्छा चलो तुम्हें एक गिलास को काग़ज़ के ऊपर खड़ा करके दिखाता हूं।

मोटू : वाह! यह कौन सी बड़ी बात है। लाओ मुझे दो गिलास और काग़ज़, मैं करता हूं।

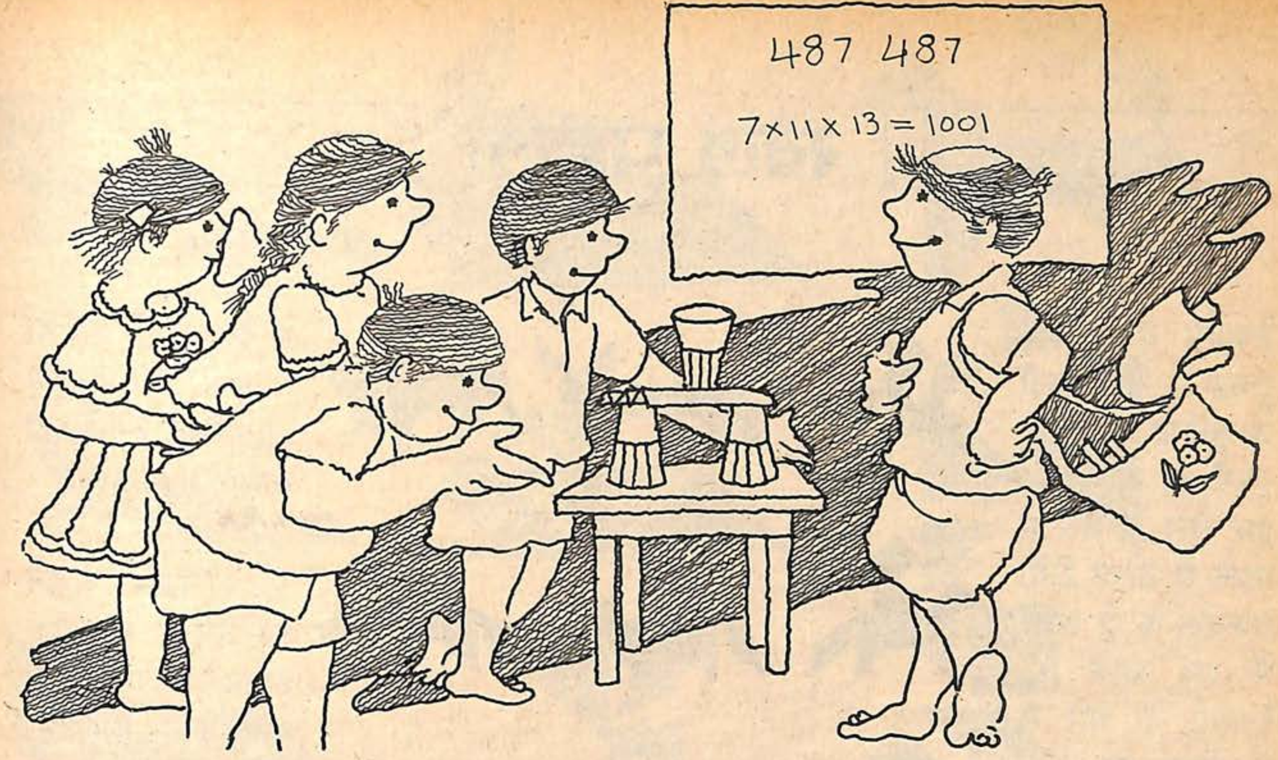

नजानू : हां, लो। *(नजानू झोले में से गिलास और काग़ज़ निकाल कर देता है मोटू काग़ज़ को ज़मीन पर रखकर उसके ऊपर गिलास रख देता है।)*

मोटू : देखो। यह तो मैंने ही कर दिया।

नजानू : ऐसे नहीं। *(नजानू दो गिलासों के ऊपर काग़ज़ के दोनों सिरों को रखता है)* अब इस काग़ज़ के ऊपर गिलास रखो।

जानू : इस तरह कैसे रखा जा सकता है?

गुलेलबाज़ : नहीं। इस पर गिलास नहीं रखा जा सकता।

नजानू : तुम लोग करके देख लो, फिर मैं करके दिखाऊंगा।

जल्दबाज़ : नजानू तुम्हीं करो ना हमसे यह नहीं होगा।

नजानू : अच्छा। देखो, काग़ज़ को मैं इस तरह मोड़ता हूं। *(वह काग़ज़ को इस तरह मोड़ता है जैसे हम पंखा या सांप बनाने के लिये मोड़ते हैं)* और अब यह काग़ज़ दो गिलासों के किनारों पर रख दिया। इसके ऊपर गिलास आसानी से खड़ा हो जाएगा।

(नजानू काग़ज़ को मोड़कर दो गिलासों के किनारों पर रखकर तीसरा गिलास काग़ज़ पर खड़ा करता है।)

गोलीवाला : अरे वाह! यह तो हमने सोचा ही नहीं था।

नजानू : तुमने सोचा हो या नहीं पर मैंने बुद्धू नहीं बनाया किसी को। अच्छा अब चलो, चलकर आम खाते हैं बाक़ी सवाल फिर।

छोटू : वाह! यह हुई न कोई बात।

सब : चलो-चलो। मज़ा आ गया।

देखो देखो नजानू का हाल देखो
कैसे चलता है, इसकी यह चाल देखो
देखो देखो नजानू का हाल देखो।

(गीत गाते -गाते सब जाते हैं)

(इस नाटक में आए कुछ चरित्र निकोलाई नोसोव की कहानियों से लिए गए हैं।)

☐ कविता सुरेश
सभी चित्र : धनंजय

खेल पहेली

टेनग्राम यानी सात टुकड़ों से बनी आकृतियों का खेल। तुममें से कुछ लोग इस खेल के बारे में पहले से जानते होगे। चकमक के दो अंकों में हम पहले भी टेनग्राम के बारे में प्रकाशित कर चुके हैं। ये अंक हैं-जुलाई, 85 तथा अप्रैल, 89 के। पर इस अंक से हम इसे एक पहेली के रूप में प्रकाशित कर रहे हैं।

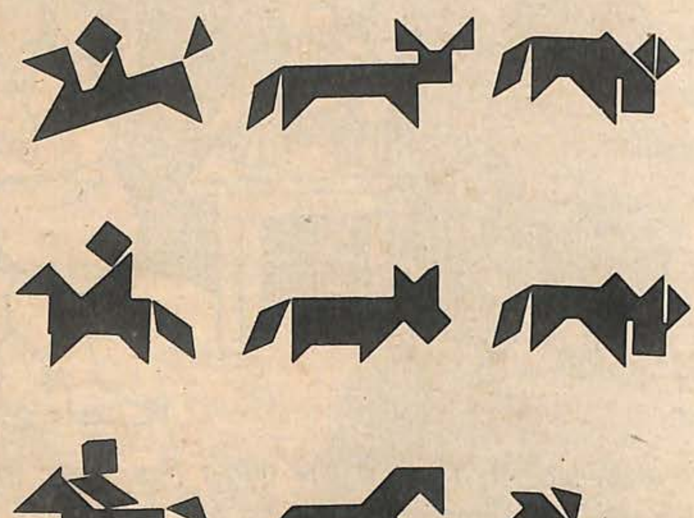

सामने के पृष्ठ पर बिल्ली, खरगोश तथा घोड़े की विभिन्न आकृतियां दी गई हैं। ये आकृतियां टेनग्राम के सात टुकड़ों से ही बनी हैं। यहां प्रत्येक जानवर की एक आकृति बनाने का तरीक़ा बताया गया है। साथ में प्रत्येक की तीन-तीन और आकृतियां हैं, उन्हें तुम बनाकर देखो। अगर न बना पाओ तो हल अगले अंक में देखना। तो बस हर अंक में ऐसी ही कुछ आकृतियां बनाने की माथा पच्ची करना!

टेनग्राम बनाने का तरीक़ा तो बहुत आसान है। एक मोटा गत्ता लो। उस पर एक बड़ा वर्ग बनाओ। इस वर्ग को 16 बराबर, हिस्सों में बांट दो। हर हिस्सा भी एक वर्ग होगा। अच्छा होगा यदि तुम ऐसा वर्ग बनाओ, जिसकी भुजाओं की लंबाई 2 या 4 के गुणनफल में हो।

अब वर्ग पर चित्र में दिखाए अनुसार रेखाएं खींच लो। अब इन रेखाओं पर से गत्ते को टुकड़ों में काट लो। टुकड़ों पर रंगीन काग़ज़ चिपकाकर सुंदर बना सकते हो। बस इन्हीं टुकड़ों को आपस में मिलाकर रखने पर आकृतियां बनेंगी।

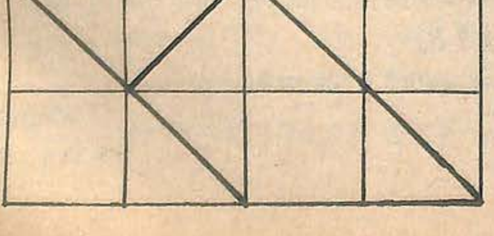

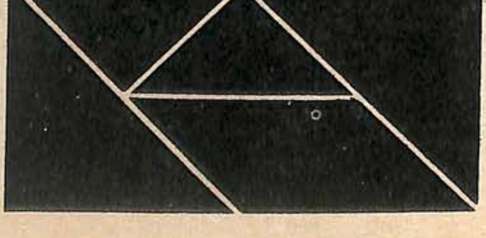

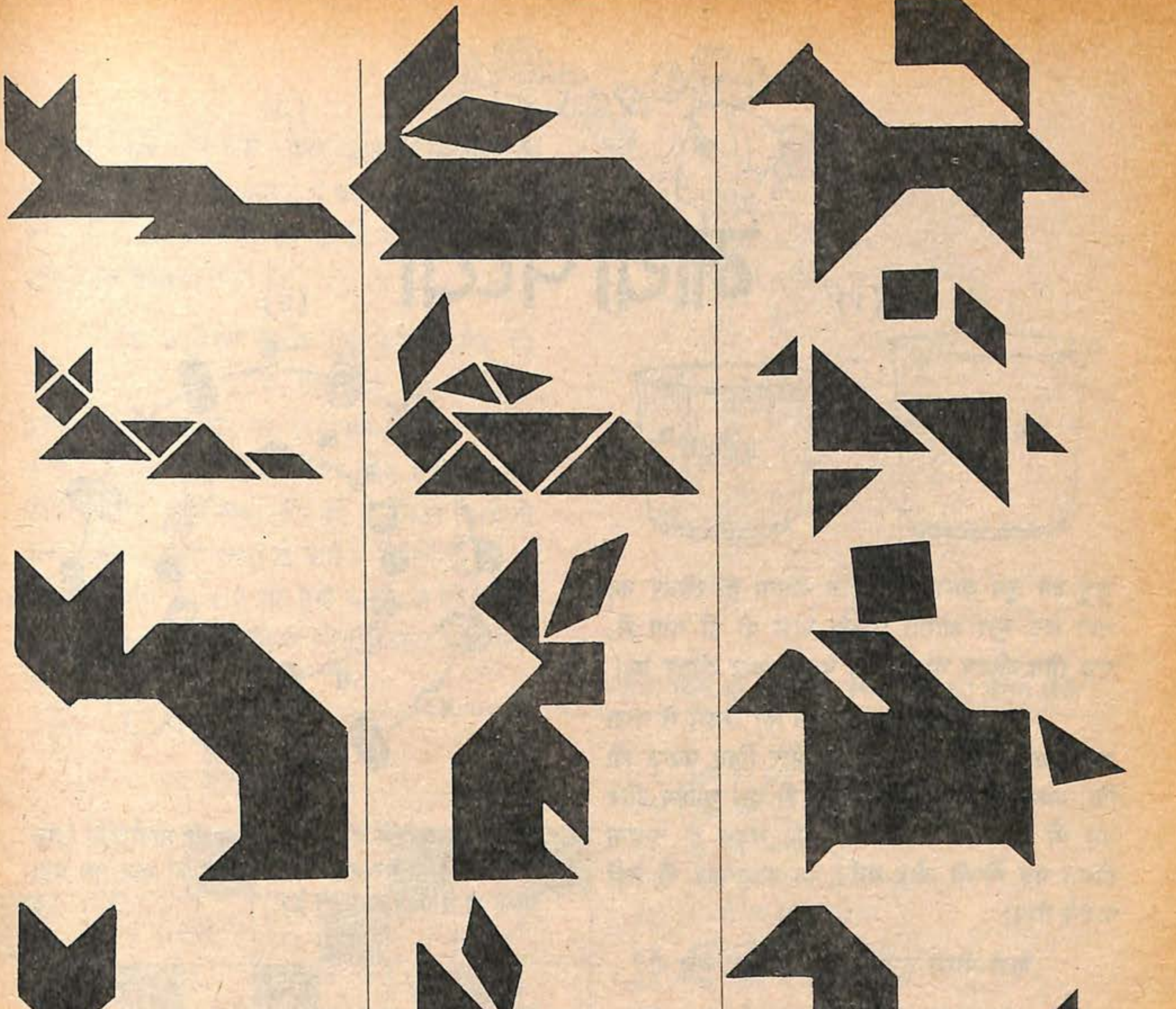

माथापच्ची

(1)

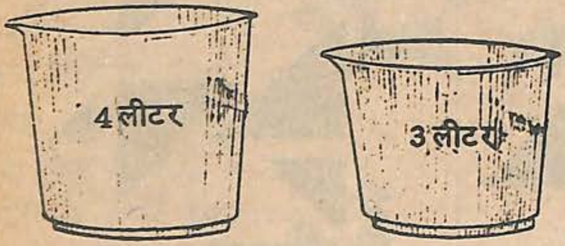

चुन्नू का दूध वाला एक दिन अपना दो लीटर का नाप घर भूल आया। उसके पास दो ही नाप थे, एक तीन लीटर वाला और दूसरा चार लीटर का।

चुन्नू को अपने दूध वाले को छेड़ने में मज़ा आता था। उसने मौक़ा ताड़ा और ज़िद पकड़ ली कि, आज तो केवल दो लीटर ही दूध चाहिए और वह भी केवल इन दो नापों की मदद से नापना होगा। वह किसी और बर्तन का इस्तेमाल भी नहीं करने देगा।

कैसे पीछा छुड़ाया होगा उसने चुन्नू से?

(2)

कबड्डी की एक प्रतियोगिता में 36 खिलाड़ियों ने भाग लिया। सभी का खेल अच्छा था। आयोजकों ने सबको पुरस्कार देने की घोषणा की। समारोह में मौजूद एक दर्शक ने अपनी तरफ से 6 और पुरस्कार देने की घोषणा की। पर किन खिलाड़ियों को दिए जाएं, वह यह तय नहीं कर पाया। दर्शक के साथ उसकी आठ-नौ साल की बेटी भी थी। उसने सुझाव दिया कि पहले सभी खिलाड़ियों को एक गोले में खड़ा कर दिया जाए। जब सब खिलाड़ी खड़े हो गए तो उसने उन्हें क्रमशः 1 से 36 तक के नंबर दे दिए। फिर थोड़ा सोचकर बोली, अब हर दसवें खिलाड़ी को पुरस्कार दिया जाए। ऐसा ही किया गया।

तुम्हें यह बताना है कि वे 6 खिलाड़ी कौन से हैं? याद है, हर खिलाड़ी का अपना एक नंबर है।

(3)

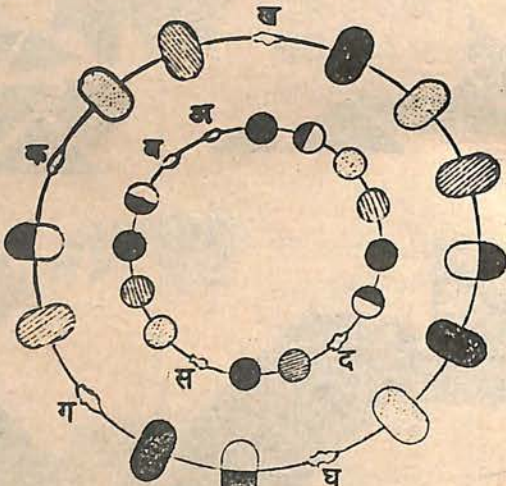

मोतियों से बनी ये दो मालाएं हैं। इनमें मोती एक ख़ास क्रम में लगे हैं। पर कुछ मोती खो गए हैं। क्या तुम बता सकते हो वे कौन-से मोती हैं?

(4)

दो मांओं ने अपनी बेटियों को मेला घूमने के लिए पैसे दिए। एक बेटी को तीस रुपए मिले और दूसरी को बीस। लेकिन दोनों के कुल पैसों का जोड़ भी तीस रुपये ही हुआ। बूझो तो चक्कर क्या है?

(5)

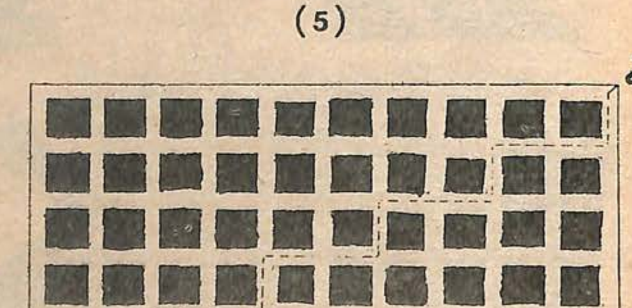

अ से ब तक जाने के कितने रास्ते हो सकते हैं? एक रास्ता चित्र में दिखाया गया है।

(6)

प्रदीप, अब्दुल और सरोज गहरे दोस्त हैं। उन्हें जो भी चीज़ मिलती है उसे वे आपस में बांट लेते हैं। पर बांटने का तरीका, साधारण तरीक़ा नहीं है। वे अपनी उम्र के आधार पर बंटवारा करते हैं।

एक उदाहरण देखो। एक साल प्रदीप को अपने जन्मदिन पर 770 रंग-बिरंगी पेंसिलें मिलीं। उन्होंने उम्र के आधार पर ही उनका बंटवारा किया। बंटवारे के समय तीनों की उम्र का जोड़ $17\frac{1}{2}$ वर्ष था। बंटवारा करते समय जब प्रदीप को 4 पेंसिलें मिलीं तो अब्दुल को 3, जब प्रदीप के पास 6 पेंसिलें हो गईं तो सरोज के पास 7। अब यह तुम्हें बताना है कि प्रत्येक को कुल कितनी पेंसिलें मिलीं और प्रत्येक की उम्र क्या है?

(7)

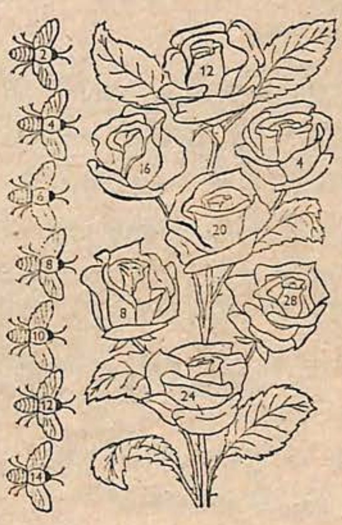

बताओ कौन सी मधुमक्खी किस फूल का पराग लेगी?

वर्ग-पहेली-6

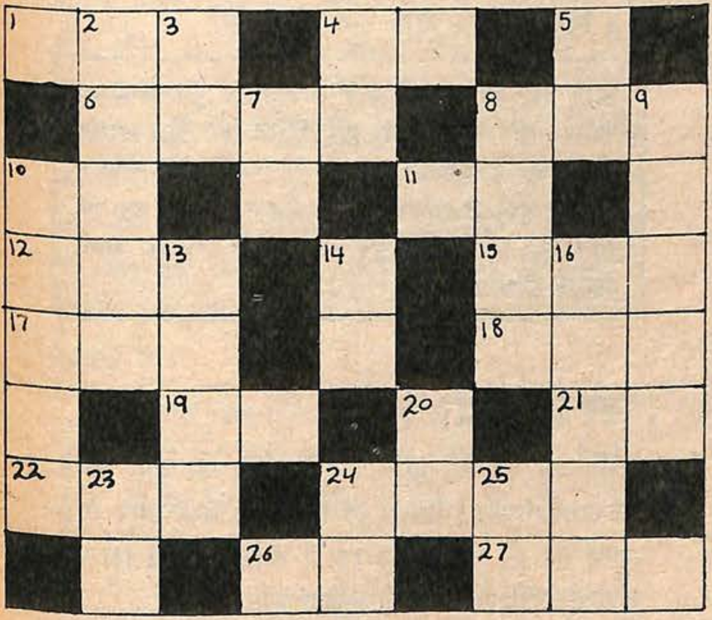

संकेत: बाएं से दाएं

1. चंचल (3)
4. उकसाना (2)
6. रोज़-रोज़ (2,2)
8. बड़प्पन (3)
10. --------! कितना अच्छा लगा। (2)
11. आधे अजगर में बकरा (2)
12. मत सता रि, नदी (2)
15. सांप का डसना (3)
17. नहन में चोट, क़त्ल और पिटाई (3)
18. ला तब, बाजा (3)
19. बाढ़, पूरा से थोड़ा कम (2)
22. उथले का विपरीत (3)
24. संगीत में पहले चार स्वर (4)
26. मत पलट में अंधेरा (2)
27. तालों में ताल, भोपाल ताल; बाकी सब.... (3)

संकेत: ऊपर से नीचे

2. पानी भरने वाली (5)
3. तल में बुरी आदत (2)
4. 100 (2)
5. पूंछ कटे अरित्र में शत्रु (2)
7. अपना (2)
8. खाने के और, दिखाने के और.....(2,2)
9. 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से प्रसिद्ध कवि (5)
10. मिलकर काम न करना (5)
13. तारा पून को उलट-पुलट करो तो बज उठे (4)
14. एक सही एक बटा चार, यानी...(2)
16. अय्यप्पा का प्रसिद्ध पर्वतीय मंदिर (5)
20. पर कहीं पंख तो नहीं ? (2)
23. औज़ार भी, उपाय भी (2)
24. आलस मत कर में एक जैसा (2)
25. दशा (2)

(आशा अय्यर, नेपानगर द्वारा तैयार)

क्यों....क्यों...13

पत्तियों पर उभरते सांपों की आकृति के बारे में तुमने इसी अंक में पढ़ा ही होगा। शायद घर में या अपने आसपास इसकी चर्चा भी सुनी होगी।

याद करो, कोई दो साल पहले भी ऐसी ही एक अजीबो-ग़रीब घटना घटी थी। लोगों ने अपने घर के दरवाज़े की दीवार पर हल्दी के हाथे (पंजे की छाप) लगाए थे। कहीं-कहीं यह मेंहदी से लगाए गए थे। तब अफ़वाह यह थी कि जो ऐसा नहीं करेगा, उसके घर चुड़ैल आएगी। उसका अनिष्ट हो जाएगा। और ऐसी ही तमाम बातें।

तुमने कुछ ऐसी चिट्ठियां/पर्चे भी देखे होंगे-

जय फलां की। फलां आपकी रक्षा करे। आपके सारे मनोरथ पूरे करे। आपको धन-धान्य दे। जय फलां की। जो भाई-बहन इस पर्चे को पढ़ें वह अपने परिवार वालों और परिचितों को पढ़वाएं। इस पर्चे की 500 प्रतियां छपवाकर बंटवाएं। अगर इसे पढ़ने वाले ने पर्चे नहीं बंटवाए तो जल्दी ही भारी नुकसान उठाना पड़ेगा। श्री 'क' ने इस पर्चे की 2500 प्रतियां छपवाकर बंटवाई, तो उन्हें व्यापार में 25,000 का फ़ायदा हो गया। लेकिन 'ग' ने पर्चा पढ़कर फेंक दिया, दूसरे ही दिन 'ग' की एक दुर्घटना में टांग टूट गई। इसलिए आप भी तुरंत पर्चा छपवाकर बंटवाएं!

जय-फलां की!

आमतौर पर ऐसी चिट्ठियों/ पर्चों में भेजने वालों के नाम नहीं होते हैं। चकमक संपादक के नाम भी ऐसे पत्र आते रहते हैं। ख़ैर....

सवाल यह है कि यह सब क्यों किया जाता है? कौन लोग करते हैं? और आख़िर इससे क्या फ़ायदा होता है? किसे फ़ायदा होता है? संभव है तुम्हारे पास भी कभी ऐसी चिट्ठी आई हो या ऐसा पर्चा तुम्हारे हाथ लगा हो। तो तुमने भी कुछ माथापच्ची की होगी। न की हो तो अब कर डालो।

तुमने क्या निष्कर्ष निकाला, हमें भी लिखो। अगर ऐसी अन्य घटनाओं के बारे में जानते हो तो उनके बारे में भी लिखो।

अपनी टिप्पणियां/विचार हमें **15 दिसंबर, 91 तक** भेज सकते हो।

ध्यान रहे यह ज़रूरी नहीं है कि हर पुरानी प्रथा, परंपरा या रीतिरिवाज़ दकियानूसी ही हो, उसके पीछे कोई तार्किक आधार भी हो सकता है। आधार एक या एक से अधिक भी हो सकते हैं। पर यह भी आवश्यक नहीं है कि हर परंपरा या प्रथा के पीछे आधार होगा ही।

क्यों....क्यों–8 : सच क्या है?

क्यों..... क्यों....8 में दो सवाल थे। पहला, 'छींक से क्या होता है?' और दूसरा यह कि, 'बिल्ली रास्ता काट दे तो क्या होता है?'

जवाब में हमें 20 से कुछ अधिक पत्र मिले हैं। अधिकांश पत्रों में तो बस यही कहा गया है कि छींक को किसी काम की सफलता-असफ़लता का सूचक समझा जाता है। इसी तरह बिल्ली द्वारा रास्ता काटना भी ऐसी ही बातों का सूचक होता है। शेष कुछ पत्रों में कहा गया है कि ये निरे अंधविश्वास हैं, इनसे कुछ होता-जाता नहीं है।

सच क्या है? यह सवाल तुम्हारे मन में अभी ज्यों का त्यों होगा। पहले छींक की बात करते हैं। अगर हम यह समझ लें कि छींक क्यों और कैसे आती है? तो यह तय करने में मदद मिलेगी कि वह वास्तव में किस बात की सूचक है!

उम्मीद है तुम अपनी नाक के बारे में जानते ही होगे, मतलब उसकी बनावट और कामधांम के बारे में। नाक की भीतरी दीवार पर जो पतली झिल्ली होती है उसे म्यूकस झिल्ली कहा जाता है। जब किसी कारण से इस झिल्ली में सूजन आ जाती है या खुजली होने लगती है तो छींक आती है। छींक में नाक और मुंह से हवा तेज़ी के

साथ निकलती है। आमतौर पर यह सूजन ज़ुकाम के कारण आती है। कभी-कभी कोई पदार्थ भी नाक के भीतर पहुंचकर झिल्ली में सुरसुराहट पैदा कर देता है। कुछ लोगों को धूल, धुआं, फूलों के परागकण, इत्र, सुगंध, छौंक-बघार आदि से भी छींक आने लगती है। इसे किसी चीज़ से एलर्जी होना भी कहा जाता है। कभी-कभी आंख के रेटिना से मस्तिष्क को जाने वाली आप्टिक नर्व तेज़ प्रकाश से उत्तेजित हो जाती है, जिससे छींक आने लगती है।

वास्तव में छींक के माध्यम से शरीर उन पदार्थों को बाहर निकालने की कोशिश करता है जो म्यूकस झिल्ली में सुरसुराहट पैदा कर देते हैं।

यह तो तुमने महसूस किया होगा कि छींक आने पर पूरे शरीर को झटका-सा लगता है। ऐसा अनुमान है कि छींक के समय नाक और मुंह से निकलने वाली हवा का वेग 160 किलोमीटर प्रतिघंटा तक होता है। छींक आने पर जैसे पूरा शरीर हिल जाता है और आंखें बंद हो जाती हैं। अब सोचो अगर किसी को लगातार पांच-छह छींकें आ जाएं तो उसकी हालत तो और ख़राब हो जाएगी। व्यक्ति भी असंतुलित-सा हो जाता है। ऐसे में अगर उस व्यक्ति को दो पल रुकने के लिए कहा जाए तो ठीक ही लगता है। लेकिन छींक किसी और को आ रही हो और रुकने के लिए किसी अन्य व्यक्ति को कहा जाए! यह तो बिना मतलब का लगता है।

जहां तक छींक से रोगाणु फैलने या फैलाने की बात है तो सर्दी-ज़ुकाम की छींक में तो रोगाणु होते ही हैं। उसमें रुकने न रुकने से क्या अंतर पड़ेगा? खैर....

बिल्ली द्वारा रास्ता काट देने पर रुककर खड़े हो जाना तो समझ से बिलकुल परे है। भई हमने तो यह आज़माकर देखा है, बिल्ली द्वारा रास्ता काट देने पर हम रुके नहीं, चलते ही रहे। कुछ भी नहीं हुआ। और एक बार नहीं, कई दफ़ा। तुम भी आज़मा लो।

जिन पाठकों ने जवाब भेजे–चेतनराम जाट, गोरी का बास; ललित हर्ष, गुरुनानक पुरा; मंजू देवी पारीक, भाकरी; महेश रावत, पालड़ी; सभी जयपुर। सुगन राम गौड़, देसूरी; पाली। प्रकाशचंद, नाथड़ियास, भीलवाड़ा। जे. पी. गोयल, शेरगढ़, जोधपुर। **सभी राजस्थान।** आशीष दलाल, खरगोन। सुरेश रावत, लहर्रा, मुरैना। राधेश्याम यादव, बेलसोंडा, रायपुर। नवलसिंह मंडलोई, तलावड़ी, धार। मुकेश कुशवाहा, करकटी, शहडोल। बलराम शर्मा, नाहरकोला कलां, होशंगाबाद। अपर्णा कनोड़िया, लश्कर, ग्वालियर। सत्येंद्रसिंह रघुवंशी, हरदा। उमाकांत भारद्वाज, बालोद, दुर्ग। कुबेर शरण द्विवेदी, छपड़ौर, शहडोल। **सभी मध्यप्रदेश।** राहुल नैथानी, **दिल्ली।**

माथापच्ची : उत्तर सितंबर, 91 अंक के

1. *कुल अमरूद 127 थे।*
2. *सिक्कों की अदला-बदली के लिए कम से कम 15 चालें लगेंगी।*
4. *100 रुपए का लाभ हुआ।*
6. *मछली के सिर, पूंछ और शेष शरीर, प्रत्येक की लंबाई 5–5 इंच है।*
8. *सिक्कों को 1 से 10 तक के अंक दे दो। अब चौथे सिक्के को पहले पर, छठवें को नवें पर, आठवें को तीसरे पर, दूसरे को पांचवें पर, और दसवें को सातवें सिक्के पर रखो।*

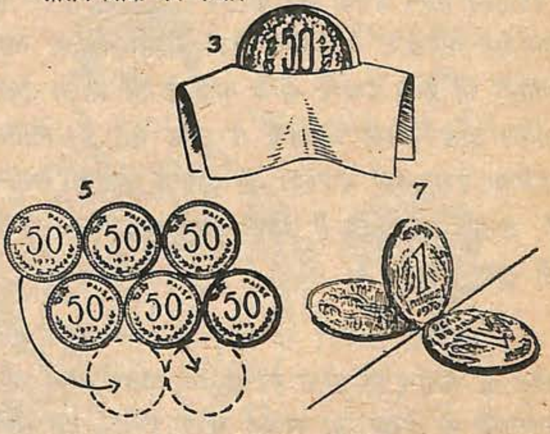

वर्ग पहेली

5 : हल

1 दं	■	2 का	य	3 दा	■	4 शा	5 य	द
6 ग	ट	र	■	7 वा	र	■	म	■
लौ	■	ण	■	न	■	8 भ	न	9 क
■	10 र	■	11 फा	ल	12 कु	■	■	नि
13 स	वि	न	य	■	14 अ	ध	15 प	का
ड़	■	■	16 दा	17 य	र	■	ग	■
18 क	19 मा	न	■	क्ष	■	20 न	■	21 ग
■	लू	■	22 धा	गा	■	23 ह	ज़ा	र
24 अ	म	न	■	25 न	ग	र	■	म

महोका

महोका कोयल परिवार का पक्षी है, तुम जानते हो कि कोयल कभी खुद घोंसला नहीं बनाती; वह कौए के घोंसले में चुपके से अंडे दे देती है और कौए न केवल इन अंडों को सेते हैं, बल्कि इनसे निकलने वाले बच्चों का पालन-पोषण भी करते हैं। कोयल परिवार के अन्य पक्षी जैसे चातक और पपीहा भी इसी प्रकार अन्य पक्षियों को झांसा देकर अपने अंडे उनके घोंसलों में छोड़ देते हैं। लेकिन महोका ऐसा नहीं करता। वह अपना घोंसला बनाता है, उनमें अंडे देता है और बच्चों का पालन-पोषण भी खुद करता है।

महोका आकार और रंगरूप में बहुत कुछ कौए के समान ही होता है। लेकिन सबसे बड़ा और आसानी से देखा जा सकने वाला अंतर यह होता है कि महोका के पंख गेरुए रंग के और आंखें लाल होती हैं। शेष सारा शरीर और टांगें काली होती हैं। इसकी पूंछ लंबी और अन्य पक्षियों की अपेक्षा कुछ अधिक चौड़ी होती है। नर और मादा का रंगरूप एक-सा होता है।

महोका का अंग्रेज़ी नाम **क्रो-फेज़ंट** है। इसे **कूकल** भी कहते हैं।

यह बहुत कम उड़ता है और अधिकांश समय घनी झाड़ियों में या पेड़ों पर अपना भोजन ढूंढता रहता है। यदि मजबूरी में इसे ज़मीन पर उतरना पड़े, तो यह बहुत कम दूरी तक उड़कर फिर ज़मीन पर या पेड़ की डाल पर बैठ जाता है। गिरगिट, छोटे सांप, चूहे, मेंढक और दूसरे पक्षियों के अंडे व बच्चे इसका भोजन हैं। यह प्रायः छोटे पक्षियों के घोंसलों पर दिन दहाड़े डाका डालकर उनके अंडों और बच्चों को खा जाता है।

अधिकांश समय झाड़ियों में बिताने के कारण महोका कम दिखाई पड़ता है, किंतु इसकी तेज़ आवाज़ ज़रूर सुनाई पड़ती रहती है। जब कोई एक महोका ऊंची आवाज़ में लगातार 5-6 बार हूक-हूक-हूक बोलता है, तो वहीं-कहीं बैठा दूसरा महोका उसे इसी तरह जवाब देता है। इस तरह इनकी बातचीत काफ़ी समय तक चलती रहती है। प्रजनन काल में इसकी यह आवाज़ अधिक सुनाई पड़ती है, विशेषकर भोर के समय।

महोका का प्रजनन काल जून से सितंबर तक होता है। किसी कांटेदार पेड़ या झाड़ी में ज़मीन से लगभग 3 मीटर की ऊंचाई पर नर और मादा बड़ा-सा, गोल घोंसला बनाते हैं। इसमें मादा 3 या 4 सफ़ेद अंडे देती है। अंडों को सेने और बच्चों के लिए भोजन जुटाने का काम नर और मादा मिलकर करते हैं।

□ **अरविंद गुप्ते**

(चित्र सौजन्य : बाम्बे, नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी)

बड़े भाई साहब

मेरे भाई साहब मुझसे पांच साल बड़े थे, लेकिन केवल तीन दरजे आगे। उन्होंने भी उसी उम्र में पढ़ना शुरू किया था जब मैंने शुरू किया; लेकिन तालीम जैसे महत्व के मामले में वह जल्दबाज़ी से काम लेना पसंद न करते थे। इस भावना की बुनियाद ख़ूब मज़बूत डालनी चाहते थे, जिस पर आलीशान महल बन सके। एक साल का काम दो साल में करते थे। कभी-कभी तीन साल भी लग जाते थे। बुनियाद भी पुख़्ता न हो, तो मकान कैसे पाएदार बने!

मैं छोटा था, वह बड़े थे। मेरी उम्र नौ साल की थी, वह चौदह साल के थे। उन्हें मेरी निगरानी का पूरा और जन्मसिद्ध अधिकार था। और मेरी शालीनता इसी में थी कि उनके हुक्म को क़ानून समझूं।

वह स्वभाव से बड़े अध्ययनशील थे। हरदम किताब खोले बैठे रहते। और शायद दिमाग़ को आराम देने के लिए कभी कापी पर, कभी किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तस्वीरें बनाया करते थे। कभी-कभी एक ही नाम या शब्द या वाक्य दस-बीस बार लिख डालते। कभी एक शेर को बार-बार सुंदर अक्षरों में नक़ल करते। कभी शब्द-रचना करते, जिसमें न कोई अर्थ होता, न कोई सामंजस्य। मसलन एक बार उनकी कापी पर मैंने यह इबारत देखी-स्पेशल, अमी ना, भाइयों-भाइयों, दरअसल, भाई-भाई, राधेश्याम-श्रीयुक्त राधेश्याम, एक घंटे तक-इसके बाद एक आदमी का चेहरा बना हुआ था। मैंने बहुत चेष्टा की कि इस पहेली का कोई अर्थ निकालूं, लेकिन असफल रहा। और उनसे पूछने का साहस न हुआ। वह नवीं जमात (कक्षा) में थे, मैं पांचवी में। उनकी रचनाओं को समझना मेरे लिए छोटा मुंह बड़ी बात थी।

मेरा जी पढ़ने में बिलकुल न लगता था। एक घंटा भी किताब लेकर बैठना पहाड़ था। मौक़ा पाते ही होस्टल से निकलकर मैदान में आ जाता, और कभी कंकरियां उछालता, कभी काग़ज़ की तितलियां उड़ाता, और कहीं कोई साथी मिल गया, तो पूछना ही क्या। कभी चारदीवारी पर चढ़कर नीचे कूद रहे हैं, कभी फाटक पर सवार, उसे आगे-पीछे चलाते हुए मोटरकार का आनंद उठा रहे हैं, लेकिन कमरे में आते ही भाई साहब का वह रुद्र-रूप देखकर प्राण सूख जाते! उनका पहला सवाल यह होता, 'कहां थे?' हमेशा यही सवाल, इसी ध्वनि में हमेशा पूछा जाता था और इसका जवाब मेरे पास केवल मौन था।

'इस तरह अंग्रेज़ी पढ़ोगे तो ज़िंदगी-भर पढ़ते रहोगे और हर्फ़ न आएगा। अंग्रेज़ी पढ़ना कोई हंसी-खेल नहीं

है कि जो चाहे, पढ़ ले, नहीं ऐरा-ग़ैरा नत्थू-ख़ैरा सभी अंग्रेज़ी के विद्वान हो जाते। यहां रात-दिन आंखें फोड़नी पड़ती हैं और ख़ून जलाना पड़ता है, तब कहीं यह विद्या आती है। और आती क्या है, हां कहने को आ जाती है। बड़े-बड़े विद्वान भी शुद्ध अंग्रेज़ी नहीं लिखते, बोलना तो दूर रहा। और मैं कहता हूं, तुम कितने घोंघा हो कि मुझे देखकर भी सबक़ नहीं लेते। मैं कितनी मेहनत करता हूं, यह तुम अपनी आंखों से देखते हो, अगर नहीं देखते, तो यह तुम्हारी आंखों का कसूर है, तुम्हारी बुद्धि का कसूर है। इतने मेले-तमाशे होते हैं, मुझे तुमने कभी देखने जाते देखा है ? रोज़ ही क्रिकेट और हाकी-मैच होते हैं। मैं पास नहीं फटकता। हमेशा पढ़ता रहता हूं। उस पर भी एक-एक दरजे में दो-दो, तीन-तीन साल पड़ा रहता हूं, फिर भी तुम कैसे आशा करते हो कि तुम यों खेल-कूद में वक़्त गंवाकर पास हो जाओगे? मुझे तो दो ही तीन साल लगते हैं, तुम उम्र-भर इसी दरजे में पड़े सड़ते रहोगे। अगर तुम्हें इस तरह उम्र गंवानी है तो बेहतर है; घर चले जाओ और मज़े से गुल्ली-डंडा खेलो। दादा की गाढ़ी कमाई के रुपए क्यों बरबाद करते हो?'

मैं यह लताड़-सुनकर आंसू बहाने लगता। जवाब ही क्या था । अपराध तो मैंने किया, लताड़ कौन सहे? भाई साहब उपदेश की कला में निपुण थे। ऐसी-ऐसी लगती बातें कहते, ऐसे-ऐसे सूक्ति-बाण चलाते, कि मेरे जिगर के टुकड़े-टुकड़े हो जाते और हिम्मत टूट जाती। इस तरह जान तोड़कर मेहनत करने की शक्ति मैं अपने में न पाता था और उस निराशा में ज़रा देर के लिए मैं सोचने लगता, क्यों न घर चला जाऊं। जो काम मेरे बूते के बाहर है, उसमें हाथ डालकर क्यों अपनी ज़िंदगी ख़राब करूं। मुझे अपना मूर्ख रहना मंजूर था, लेकिन उतनी मेहनत! मुझे तो चक्कर आ जाता था; लेकिन घंटे-दो घंटे के बाद निराशा के बादल फट जाते और मैं इरादा करता कि आगे खूब जी लगाकर पढ़ूंगा। चटपट एक टाइम-टेबिल बना डालता।

मगर टाइम-टेबिल बना लेना एक बात है, उस पर अमल करना दूसरी बात। पहले ही दिन उसकी अवहेलना शुरू हो जाती। मैदान की वह सुखद हरियाली, हवा के हल्के-हल्के झोंके, फुटबाल की वह उछलकूद, कबड्डी के वह दांव-घात, बालीबाल की वह तेज़ी और फुरती, मुझे अज्ञात और अनिवार्य रूप से खींच ले जाती। वहां जाते ही मैं सब कुछ भूल जाता। वह जान लेवा टाइम-टेबिल, यह आंखफोड़ पुस्तक, किसी की याद न रहती, और भाई साहब को नसीहत और फ़ज़ीहत का अवसर मिल जाता।

○ ◇

सालाना इम्तहान हुआ। भाई साहब फ़ेल हो गए, मैं पास हो गया और दरजे में प्रथम आया। मेरे और उनके बीच में केवल दो साल का अंतर रह गया। जी में आया, भाई

प्रेमचंद

जन्म 31-7-1880

निधन 8-10-1936

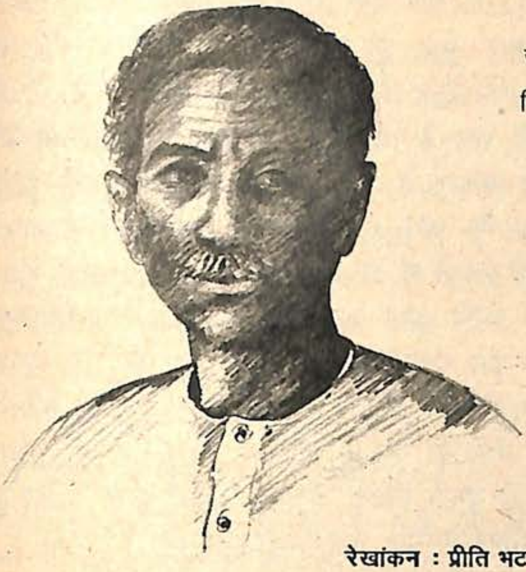

रेखांकन : प्रीति भटनागर

मुंशी प्रेमचंद हिंदी के जाने-माने कहानीकार, एवं उपन्यासकार हैं। भारतीय ग्रामीण जीवन और जनमानस की विभिन्न स्थितियों का उन्होंने अपनी रचनाओं में जीवंत चित्रण किया है। उनकी लिखी पंच परमेश्वर, ईदगाह, नमक का दरोग़ा आदि कहानियां तुमने अपनी पाठ्य पुस्तकों में पढ़ी होंगी। पचपन साल पहले लिखी गई कई कहानियां, ऐसी लगती हैं, जैसे आज की ही हों। ऐसी ही एक कहानी यहां दी गई है। मूल कहानी को हमने थोड़ा संक्षिप्त किया है।

साहब को आड़े हाथों लूं, आपकी वह घोर तपस्या कहां गई? मुझे देखिए, मज़े से खेलता भी रहा और दरजे में अव्वल भी हूं। लेकिन वह इतने दुखी और उदास थे कि मुझे उनसे दिली हमदर्दी हुई और उनके घाव पर नमक छिड़कने का विचार ही लज्जास्पद जान पड़ा। हां, अब मुझे अपने ऊपर कुछ अभिमान हुआ और आत्मसम्मान भी बढ़ा। भाई साहब का वह रोब मुझ पर न रहा। आज़ादी से खेलकूद में शरीक होने लगा। दिल मज़बूत था। अगर उन्होंने फिर फ़ज़ीहत की, तो साफ़ कह दूंगा, आपने अपना ख़ून जलाकर कौन-सा तीर मार लिया। मैं तो खेलते-कूदते दरजे में अव्वल आ गया। ज़ुबान से यह हेकड़ी जताने का साहस न होने पर भी मेरे रंग-ढंग से साफ़ ज़ाहिर होता था कि भाई साहब का वह आतंक मुझ पर नहीं था।

भाई साहब ने इसे भांप लिया, उनकी सहज बुद्धि बड़ी तीव्र थी। और एक दिन जब मैं भोर का सारा समय गुल्ली-डंडे की भेंट करके ठीक भोजन के समय लौटा तो भाई साहब ने मानो तलवार खींच ली और मुझ पर टूट पड़े, देखता हूं इस साल पास हो गए और दरजे में अव्वल आ गए, तो तुम्हें दिमाग़ हो गया है,मगर भाईजान, घमंड तो बड़े-बड़ों का नहीं रहा, तुम्हारी क्या हस्ती है? तुमने तो अभी केवल एक दरजा पास किया है, और अभी से तुम्हारा सिर फिर गया, तब तो तुम आगे पढ़ चुके। यह समझ लो कि तुम अपनी मेहनत से नहीं पास हुए, अंधे के हाथ बटेर लग गई। मगर बटेर केवल एक बार हाथ लग सकती है, बार-बार नहीं लग सकती। कभी-कभी गुल्ली-डंडे में भी अंधा-चोट निशाना पड़ जाता है। इससे कोई सफल खिलाड़ी नहीं हो जाता। सफल खिलाड़ी वह है, जिसका कोई निशाना ख़ाली न जाए।

मेरे फ़ेल होने पर मत जाओ। मेरे दरजे में आओगे, तो दांतों पसीना आ जाएगा, जब अलजबरा और जामेट्री के लोहे के चने चबाने पड़ेंगे, और इंगलिस्तान का इतिहास पढ़ना पड़ेगा। बादशाहों के नाम याद रखना आसान नहीं। आठ-आठ हेनरी ही गुज़रे हैं। कौन-सा कांड किस हेनरी के समय में हुआ, क्या यह याद कर लेना आसान समझते हो? हेनरी सातवें की जगह आठवां लिखा और सब नंबर ग़ायब! सफाचट। सिफ़र भी न मिलेगा, सिफ़र भी! हो किस ख़्याल में। दरजनों तो जेम्स हुए हैं, दरजनों विलियम, कोड़ियों चार्ल्स! दिमाग़ चक्कर खाने लगता है। आंधी रोग हो जाता है। इन अभागों को नाम भी न जुड़ते थे। एक ही नाम के पीछे दोयम, सोयम, चहारुम, पंचुम लगाते चले गए। मुझसे पूछते, तो दस लाख नाम बता देता और जामेट्री तो बस ख़ुदा की पनाह! अ ब ज की जगह अ ज ब लिख दिया

और सारे नंबर कट गए। कोई इन निर्दयी परीक्षकों से नहीं पूछता कि आख़िर अ ब ज और अ ज ब में क्या फ़र्क है, और व्यर्थ की बात के लिए क्यों छात्रों का ख़ून करते हो। दाल-भात-रोटी खाई या भात-दाल-रोटी खाई, इसमें क्या रखा है, मगर इन परीक्षकों को क्या परवाह। वह तो वही देखते हैं जो पुस्तक में लिखा है। चाहते हैं कि लड़के अक्षर-अक्षर रट डालें। और इसी रटंत का नाम शिक्षा रख छोड़ा है। और आख़िर इन बे-सर-पैर की बातों के पढ़ने से फ़ायदा? इस रेखा पर वह लंब गिरा दो, तो आधार लंब से दुगुना होगा। पूछिए, इससे प्रयोजन? दुगुना नहीं, चौगुना हो जाए, या आधा ही रहे, मेरी बला से; लेकिन परीक्षा में पास होना है, तो यह सब ख़ुराफ़ात याद करनी पड़ेगी!

कह दिया, 'समय की पाबंदी' पर एक निबंध लिखो, जो चार पन्नों से कम न हो। अब आप कापी सामने खोले, कलम हाथ में लिए उसके नाम को रोइए। कौन नहीं जानता कि समय की पाबंदी बहुत अच्छी बात है, इससे आदमी के जीवन में संयम आ जाता है, दूसरों का उस पर स्नेह होने लगता है और उसके कारोबार में उन्नति होती है; लेकिन इस ज़रा-सी बात पर चार पन्ने कैसे लिखें। जो बात एक वाक्य में कही जा सके, उसे चार पन्नों में लिखने की ज़रूरत? मैं तो इसे हिमाक़त कहता हूं। यह तो समय की किफ़ायत नहीं; बल्कि उसका दुरुपयोग है कि व्यर्थ में किसी बात को ठूंस दिया जाए। हम चाहते हैं आदमी को जो कुछ कहना हो, चटपट कह दे, अपनी राह ले। मगर नहीं, आपको चार पन्ने रंगने पड़ेंगे; चाहे जैसे लिखिए। और पन्ने भी पूरे फुलस्केप के आकार के। यह छात्रों पर अत्याचार नहीं तो और क्या है? अनर्थ तो यह है कि कहा जाता है, संक्षेप में लिखो। समय की पाबंदी पर संक्षेप में एक निबंध लिखो, जो चार पन्नों से कम न हो। ठीक! संक्षेप में तो चार पन्ने हुए, नहीं शायद सौ-दो-सौ पन्ने लिखवाते। तेज़ भी दौड़िए और धीरे- धीरे भी है। उलटी बात है या नहीं? बालक भी इतनी-सी-बात समझ सकता है; लेकिन इन अध्यापकों को इतनी तमीज़ भी नहीं। उस पर दावा है कि हम अध्यापक हैं। मेरे दरजे में आओगे लाला, तो ये सारे पापड़ बेलने पड़ेंगे और तब आटे दाल का भाव मालूम होगा। इस दरजे में अव्वल आ गए हो, तो ज़मीन पर पांव नहीं रखते। इसलिए मेरा कहना मानिए। लाख फ़ेल हो गया हूं, लेकिन तुमसे बड़ा हूं, संसार का मुझे तुमसे ज़्यादा अनुभव है। जो कुछ कहता हूं, उसे गिरह बांधिए, नहीं पछताइएगा।

स्कूल का समय निकट था, नहीं ईश्वर जाने यह उपदेश-माला कब समाप्त होती। भोजन आज मुझे निःस्वाद-सा लग रहा था। जब पास होने पर यह तिरस्कार हो रहा है; तो फ़ेल हो जाने पर तो शायद प्राण ही ले लिए जाएं। भाई साहब ने अपने दरजे की पढ़ाई का जो भयंकर चित्र खींचा था; उसने मुझे भयभीत कर दिया। स्कूल छोड़कर घर नहीं भागा, यही ताज्जुब है, लेकिन इतने तिरस्कार पर भी पुस्तकों में मेरी अरुचि ज्यों-की-त्यों बनी रही। खेल-कूद का कोई अवसर हाथ से न जाने देता। पढ़ता भी, मगर बहुत कम, बस इतना कि रोज़ का टास्क पूरा हो जाए और दरजे में ज़लील न होना पड़े। अपने ऊपर जो विश्वास पैदा हुआ था, वह फिर लुप्त हो गया और फिर चोरों का-सा जीवन कटने लगा।

○ ◇

फिर सालाना इम्तहान हुआ, और कुछ ऐसा संयोग हुआ कि मैं फिर पास हुआ और भाई साहब फ़ेल हो गए।

मेरे और भाई साहब के बीच में अब केवल एक दरजे का अंतर और रह गया। मेरे मन में एक कुटिल भावना

उदय हुई कि कहीं भाई साहब एक साल और फ़ेल हो जाएं, तो मैं उनके बराबर हो जाऊं, फिर वह किस आधार पर मेरी फ़ज़ीहत कर सकेंगे, लेकिन मैंने इस कमीने विचार को दिल से बलपूर्वक निकाल डाला। आख़िर वह मुझे मेरे हित के विचार से ही तो डांटते हैं । मुझे इस वक़्त अप्रिय लगता है अवश्य, मगर यह शायद उनके उपदेशों का ही असर हो कि मैं दनादन पास हो जाता हूं और इतने अच्छे नंबरों से।

अब भाई साहब बहुत कुछ नर्म पड़ गए थे। कई बार मुझे डांटने का अवसर पाकर भी उन्होंने धीरज से काम लिया। शायद अब वह खुद समझने लगे थे कि मुझे डांटने का अधिकार उन्हें नहीं रहा, या रहा भी, तो बहुत कम। मेरी स्वच्छंदता भी बढ़ी। मैं उनकी सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा। मुझे कुछ ऐसी धारणा हुई कि मैं पास ही हो जाऊंगा, पढ़ूं या न पढ़ूं, मेरी तक़दीर बलवान है; इसलिए भाई साहब के डर से जो थोड़ा-बहुत पढ़ लिया करता था, वह भी बंद हुआ। मुझे कनकौए उड़ाने का नया शौक़ पैदा हो गया था और अब सारा समय पतंगबाजी की ही भेंट होता था, फिर भी मैं भाई साहब का अदब करता था, और उनकी नज़र बचाकर कनकौए उड़ाता था। मांझा देना, कने बांधना, पतंग टूरनामेंट की तैयारियां आदि समस्याएं सब गुप्त रूप से हल की जाती थीं मैं भाई साहब को यह संदेह न करने देना चाहता था कि उनका सम्मान और लिहाज़ मेरी नज़रों में कम हो गया है।

एक दिन संध्या-समय, होस्टल से दूर मैं एक कनकौआ लूटने बेतहाशा दौड़ा जा रहा था। आंखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मंद गति से झूमता पतन की ओर चला आ रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन में नए संस्कार ग्रहण करने आ रही हो। बालकों की पूरी सेना लग्गे और झाड़दार बांस लिए इनका स्वागत करने को दौड़ी आ रही थी। किसी को अपने आगे-पीछे की ख़बर न थी। सभी मानो उस पतंग के साथ ही आकाश में उड़ रहे थे, जहां सब कुछ समतल है, न मोटरकारें हैं, ट्राम, न गाड़ियां।

सहसा भाई साहब से मेरी मुठभेड़ हो गई, जो शायद बाज़ार से लौट रहे थे। उन्होंने वहीं हाथ पकड़ लिया और उग्र भाव से बोले, इन बाज़ारी लड़कों के साथ धेले के कनकौए के लिए दौड़ते तुम्हें शर्म नहीं आती? तुम्हें इसका भी कुछ लिहाज़ नहीं कि अब नीची जमाअत में नहीं हो; बल्कि आठवीं जमाअत में आ गए हो और मुझसे केवल एक दरजा नीचे हो। आख़िर आदमी को कुछ तो अपनी पोज़ीशन का ख़्याल करना चाहिए। एक ज़माना था कि लोग आठवां दरजा पास करके नायब तहसीलदार हो जाते थे। मैं कितने ही मिडिलचियों को जानता हूं जो आज अव्वल दरजे के डिप्टी मैजिस्ट्रेट या सुपरिंटेंडेंट हैं। कितने ही आठवीं जमाअत वाले हमारे लीडर समाचार पत्रों के संपादक हैं। बड़े-बड़े विद्वान उनकी मातहती में काम करते हैं। और तुम उसी आठवें दरजे में आकर बाज़ारी लड़कों के साथ कनकौए के लिए दौड़ रहे हो। मुझे तुम्हारी इस कमअक़्ली पर दुख होता है। तुम ज़हीन (बुद्धिमान) हो, इसमें शक नहीं, लेकिन वह ज़ेहन किस काम का, जो हमारे आत्मगौरव की हत्या कर डाले। तुम अपने दिल में समझते होगे, मैं भाई साहब से महज़ एक दरजा नीचे हूं, और अब उन्हें मुझको कुछ कहने का हक नहीं है, लेकिन यह तुम्हारी ग़लती है। तुमसे पांच साल बड़ा हूं और चाहे आज तुम मेरी ही जमाअत में आ जाओ, और परीक्षकों का यही हाल है, तो निस्संदेह अगले साल तुम मेरे समकक्ष हो जाओगे और शायद एक साल बाद मुझसे आगे भी निकल जाओ, लेकिन मुझमें और तुममें जो पांच साल का अंतर है, उसे तुम क्या, ख़ुदा भी नहीं मिटा सकता। मैं तुमसे पांच साल बड़ा हूं और हमेशा रहूंगा! मुझे दुनिया का और ज़िंदगी का जो तजुरबा है, तुम उसकी बराबरी नहीं कर सकते, चाहे तुम एम.ए. और डी. लिट. और डी. फिल. ही क्यों न हो जाओ। समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती, दुनिया देखने से आती है।

हमारी अम्मां ने कोई दरजा नहीं पास किया, और दादा भी शायद पांचवीं छठी जमाअत के आगे नहीं गए; लेकिन हम दोनों चाहे सारी दुनिया की विद्या पढ़ लें, अम्मां और दादा को हमें समझाने और

सुधारने का अधिकार हमेशा रहेगा। केवल इसलिए नहीं कि वे हमारे जन्मदाता हैं; बल्कि इसलिए कि उन्हें दुनिया का हमसे ज़्यादा तजुरबा है और रहेगा। अमेरिका में किस तरह राज-व्यवस्था है, और आठवें हेनरी ने कितने ब्याह किए और आकाश में कितने नक्षत्र हैं, ये बातें चाहे उन्हें न मालूम हों;लेकिन हजारों ऐसी बातें हैं, जिनका ज्ञान उन्हें हमसे और तुमसे ज़्यादा है। दैव न करे, आज मैं बीमार हो जाऊं, तो तुम्हारे हाथ-पांव फूल जाएंगे। दादा को तार देने के सिवा तुम्हें और कुछ न सूझेगा; लेकिन तुम्हारी जगह दादा हों, तो किसी को तार न दें, न घबराएं, न बदहवास हों। पहले ख़ुद मरज पहचान कर इलाज करेंगे, उसमें सफल न हुए, तो किसी डॉक्टर को बुलाएंगे, बीमारी तो ख़ैर बड़ी चीज़ है। हम-तुम तो इतना भी नहीं जानते कि महीने-भर का ख़र्च महीना-भर कैसे चले। जो कुछ दादा भेजते हैं, उसे हम बीस-बाईस तक ख़र्च कर डालते हैं, और फिर पैसे-पैसे को मुहताज हो जाते हैं। नाश्ता बंद हो जाता है, धोबी और नाई से मुंह चुराने लगते हैं, लेकिन जितना आज हम और तुम ख़र्च कर रहे हैं, उसके आधे में दादा ने अपनी उम्र का बड़ा भाग इज़्ज़त और नेकनामी के साथ निभाया है और एक कुटुंब का पालन किया है जिसमें सब मिलाकर नौ आदमी थे। तो भाई जान, यह गरूर दिल से निकाल डालो कि तुम मेरे समीप आ गए हो और अब स्वतंत्र हो। मेरे देखते तुम बेराह न चलने पाओगे। अगर तुम यों न मानोगे तो मैं (थप्पड़ दिखाकर) इसका प्रयोग भी कर सकता हूं। मैं जानता हूं, तुम्हें मेरी बातें ज़हर लग रही हैं।

मुझे आज सचमुच अपनी लघुता का अनुभव हुआ और भाई साहब के प्रति मेरे मन में श्रद्धा उत्पन्न हुई। मैंने सजल आंखों से कहा, हरगिज़ नहीं। आप जो कुछ फ़रमा रहे हैं, वह बिलकुल सच है और आपको उसके कहने का अधिकार है।

भाई साहब ने मुझे गले से लगा लिया और बोले, मैं कनकौए उड़ाने को मना नहीं करता। मेरा भी जी ललचाता है; लेकिन करूं क्या, खुद बेराह चलूं, तो तुम्हारी रक्षा कैसे करूं? यह कर्तव्य भी तो मेरे सिर है!

संयोग से उसी वक्त एक कटा हुआ कनकौआ हमारे ऊपर से गुज़रा। उसकी डोर लटक रही थी। लड़कों का एक गोल पीछे-पीछे दौड़ा चला आता था। भाई साहब लंबे हैं ही। उछलकर उसकी डोर पकड़ ली और बेतहाशा होस्टल की तरफ दौड़े। मैं पीछे-पीछे दौड़ रहा था।

□ प्रेमचंद

सभी चित्र : विवेक

सेजल के. शाह, दसवीं, भावनगर, गुजरात

मुकेश कुमार, दसवीं, करकटी, शहडोल

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/91

कुमारी एम. एन. अंकुर, पहली, दिल्ली

रेक्स डी रोजारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित
संपादक : विनोद रायना